mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-51 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

21 फरवरी 2025 शुक्रवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

विल यंग ने चैंपियंस...

@ पेज 7

राहुल गांधी के बयान पर मायावती का करारा पलटवार, भड़कीं बसपा सुप्रीमो

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के एक बयान पर गुरुवार को पलटवार किया है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने

● बीएसपी से गठबंधन की बरगलाने वाली बातें करना

एक बयान में कहा था कि मायावती बीजेपी की क्रटीम की तरह काम कर रही हैं। राहुल के इस बयान पर यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री ने भड़कते हुए कहा कि उनकी पार्टी ने जब भी कांग्रेस जैसी 'जातिवादी' पार्टियों के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ा है तो क्रास्क को उनका वोट ट्रांसफर नहीं हुआ है, जबकि उनके वोट गठबंधन के साथी को मिल जाते हैं।

मायावती ने कहा, 'कांग्रेस पार्टी जिन राज्यों में मजबूत है या जहां उनकी सरकारें हैं, वहां बीएसपी व उनके अनुयाइयों के साथ द्वेष व जातिवादी रवैया है, किन्तु यूपी जैसे राज्य में जहां कांग्रेस कमजोर है वहां बीएसपी से गठबंधन की बरगलाने वाली बातें करना, यह उस पार्टी का दोहरा चरित्र नहीं तो और क्या है? फिर भी बीएसपी ने यूपी व अन्य राज्यों में जब भी कांग्रेस जैसी जातिवादी पार्टियों के साथ गठबंधन करके चुनाव लड़ा है तब हमारा बेस वोट उन्हें ट्रांसफर हुआ है लेकिन वे पार्टियां अपना बेस वोट बीएसपी को ट्रांसफर नहीं करा पायी हैं। ऐसे में बीएसपी को हमेशा घाटे में ही रहना पड़ा है।'

मायावती ने एक अन्य ट्वीट में कहा, 'वैसे भी कांग्रेस व भाजपा आदि का चाल, चरित्र, चेहरा हमेशा बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर, उनकी अनुयायी बीएसपी व उसके नेतृत्व, उनके दलित-बहुजन अनुयाइयों एवं आरक्षण आदि का घोर विरोधी रहा है, जिससे देश संविधान का समतामूलक व कल्याणकारी उद्देश्य पाने में काफी पीछे जो चिन्ताजनक है।' बता दें कि पिछले कुछ चुनावों में बहुजन समाज पार्टी का प्रदर्शन उसके गौरवशाली अतीत की छाया ही रहा है और वह अपनी पुरानी परफॉर्मेंस के आसपास भी नहीं पहुंच पाई है।

इससे पहले राहुल गांधी ने रायबरेली में दलित छात्रों से संवाद के दौरान कहा था, 'एक सवाल है मायावती आजकल क्यों ठीक से चुनाव नहीं लड़ रहीं। हम चाहते थे कि बहन जी बीजेपी के विरोध में मेरे साथ चुनाव लड़ें। अगर तीनों पार्टियां एक साथ हो जातीं तो बीजेपी कभी चुनाव न जीतती। मायावती बीजेपी की क्रटीम बनकर काम कर रही हैं। कांशीराम जी का मैं भी सम्मान करता हूं। कांशीराम जी ने व बहन जी ने काम किया।'

संक्षिप्त समाचार

बांग्लादेशी विमान ने नागपुर में की आपात लैंडिंग

नागपुर (एजेंसी)। बांग्लादेश की एयरलाइंस बिमान बांग्लादेश के एक विमान ने भारत के महाराष्ट्र में स्थित नागपुर हवाई अड्डे पर आपात स्थिति में लैंडिंग की है। जानकारी के मुताबिक, बांग्लादेशी विमान में धुआं देखे जाने के बाद इसे नागपुर एयरपोर्ट पर लैंड कराया गया। इस विमान ने बांग्लादेश की राजधानी ढाका से दुबई के लिए

उड़ान भरी थी। हालांकि, इसे नागपुर हवाई अड्डे पर इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। नागपुर हवाई अड्डे के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक, बुधवार को रात 10ः45 बजे तकनीकी समस्याओं के कारण बांग्लादेशी विमान का रूट बदल दिया गया और उसे आपात स्थिति में नागपुर हवाई अड्डे पर उतारना पड़ा। हालांकि, गुरुवार को अधिकारियों ने बताया है कि गहन जांच करने के बाद पाया गया है कि विमान में आग लगने की कोई घटना नहीं हुई थी। जानकारी के मुताबिक, बांग्लादेशी विमान में फायर अलार्म बजा था जिसके बाद पायलट सावधान हो गया। पायलट ने एयरपोर्ट ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर को इस बात की सूचना दी और सिस्टम ऑपरेशन कमांड सेंटर को भी सतर्क कर दिया। इसके बाद विमान को नागपुर की ओर मोड़ने का निर्णय लिया गया और पूर्ण आपातकाल घोषित कर दिया गया। पूर्ण आपातकाल घोषित होने के बाद विमान को नागपुर एयरपोर्ट पर उतारा गया।

सिंगापुर में नये कानून के तहत भारतीय मूल के व्यक्ति को राहत

सिंगापुर (एजेंसी)। सिंगापुर में मौत की सजा पाए भारतीय मूल के एक मलेशियाई नागरिक को नये कानून के चलते बड़ी राहत मिली है। सिंगापुर के नये कानून के तहत भारतीय मूल के नागरिक की मौत की सजा के अमल पर फिलहाल के लिए रोक लगा दी गई है। अब नागरिक की सजा को नये कानून की कसौटी पर कसा जाएगा और दोनों पक्षों की सुनवाई के बाद आखिरी फैसला दिया जाएगा। सिंगापुर का यह नया कानून स्पष्ट करता है कि अपील के सभी रास्ते खत्म हो जाने के बाद मृत्युदंड कब दिया जा सकता है। 'द स्ट्रेट टाइम्स' की खबर के मुताबिक, पन्नीर सेल्वम प्रंथमन को 2017 में सिंगापुर में 51.84 ग्राम हेरोइन की तस्करी का दोषी ठहराया गया था और अनिवार्य मौत की सजा सुनाई गई थी। इसके बाद उसे मौत की सजा देने की तैयारी चल रही थी। मगर नये कानून के तहत उसकी सजा पर फिलहाल स्टे लग गया है। अखबार के अनुसार, प्रंथमन की सजा पर बृहस्पतिवार को अमल किया जाना था, लेकिन अपीलीय अदालत ने स्थगन आदेश दे दिया, ताकि उसकी अर्जी पर सुनवाई की जा सके। न्यायमूर्ति वू बिह ली ने अपने फैसले में कहा कि उन्होंने प्रंथमन द्वारा अपने पूर्व वकील के खिलाफ लॉ सोसायटी में की गई शिकायत के निपटारे और मादक पदार्थों के दुरुपयोग अधिनियम के तहत तर्कों को दी गई संवैधानिक चुनौती के परिणाम आने तक सजा के अमल पर रोक लगा दी है।

सीएम रेखा गुप्ता ने यमुना नदी के वासुदेव घाट पर की आरती

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता सीएम पद की शपथ ले चुकी हैं। उनके साथ मंत्रिपरिषद की भी कई विधायकों ने आज शपथ ली है। इस बीच कैबिनेट मंत्रियों के साथ रेखा गुप्ता यमुना जी के वासुदेव घाट पर पहुंची। इस दौरान उन्होंने शाम की आरती की और प्रार्थना किया। बता दें कि इस दौरान रेखा गुप्ता के साथ प्रवेश वर्मा समेत दिल्ली कैबिनेट के कई मंत्री भी मौजूद रहें। बता दें कि पूरे विधि-विधान के साथ रेखा गुप्ता ने आरती की। बता दें कि दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने रेखा गुप्ता को सीएम पद की शपथ दिलाई और विधायकों को मंत्रिपरिषद की शपथ दिलाई। बता दें कि आज शाम दिल्ली कैबिनेट की पहली बैठक होने वाली है।

एनडीए की बैठक में पीएम मोदी का ऐलान

'2 साल में जहां-जहां चुनाव वहां विपक्ष को हराएंगे'

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में गुरुवार को नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हो गया है। इस समारोह में पीएम मोदी समेत भाजपा के कई शीर्ष नेता और एनडीए शासित राज्यों के सीएम और डिप्टी सीएम मौजूद रहे। शपथ समारोह के बाद पीएम मोदी ने एनडीए के नेताओं संग अहम बैठक की। इस बैठक में पीएम मोदी ने कहा है कि आने वाले 2 साल में जहां-जहां चुनाव है वहां एनडीए विपक्ष को हराएगा।

जानकारी के मुताबिक, एनडीए की बैठक में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा है कि एनडीए एकजुट है और हम सभी विकसित भारत के लिए काम करेंगे और इस लक्ष्य को मिलकर हासिल करेंगे। जानकारी के मुताबिक, बैठक में एनडीए नेताओं ने पीएम मोदी से कहा कि महाराष्ट्र और दिल्ली की तरह हर चुनाव में एनडीए की जीत होगी। बैठक में एनडीए के नेताओं ने गठबंधन की एकता पर बल दिया है। इसके साथ ही बिहार और पश्चिम बंगाल सहित आगामी सभी विधानसभा चुनाव साथ लड़ने का संकल्प लिया है। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू, उप मुख्यमंत्री पवन कल्याण, शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजीत पवार, अपना दल (एस) के सोनेलाल पटेल सहित अन्य घटक दलों के नेता मौजूद थे।

इसके साथ ही भाजपा शासित राज्यों के कई मुख्यमंत्री भी बैठक में शामिल हुए। नेताओं ने इस साल और अगले साल होने वाले चुनावों में प्रभावशाली प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए एकजुट और मजबूती से काम करने का संकल्प लिया। साल 2025 के आखिर में बिहार में विधानसभा चुनाव का आयोजन किया जाएगा। साल 2026 में असम, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव होंगे। इसके बाद साल 2027 में गोवा, मणिपुर, पंजाब, उत्तराखंड, गुजरात, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव का आयोजन होगा।

पूर्व सीएम आतिशी ने प्रेस को किया संबोधित

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन चुकी है। रेखा गुप्ता ने दिल्ली के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली है। रेखा गुप्ता को उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने सीएम पद की शपथ दिलाई है। साथ ही इस दौरान भाजपा के कई अन्य विधायकों ने भी मंत्रिपरिषद की शपथ ली। इस बीच दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी की विधायक आतिशी प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रही हैं। आतिशी ने कहा कि रेखा गुप्ता और उनके पूरे कैबिनेट को शपथ की बधाई देती हैं। मैं उम्मीद करती हूं कि एक महिला मुख्यमंत्री होने के नाते जो वादे भाजपा ने दिल्ली की महिलाओं से किए हैं, उन वादों को रेखा गुप्ता बखूबी निभाएंगी। आतिशी ने कहा, चुनाव प्रचार के समय पीएम मोदी ने भाजपा के सभी नेताओं ने खुद रेखा गुप्ता ने दिल्ली की महिलाओं को वादा किया कि दिल्ली की हर महिला को 2500 रुपये प्रतिमाह की राशि उनके बैंक के खातों में मिलेगी। उन्होंने क्लीयर कट शब्दों में यह कहा कि जैसे ही कैबिनेट की पहली बैठक होगी, महिलाओं के लिए ढाई हजार रुपये की स्कीम महिलाओं के लिए पास होगी और 8 मार्च को महिलाओं को उनकी पहली किश्त मिल जाएगी।

केरल की फैमिली कोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी

सूचना के बाद मची अफरा-तफरी

कलपेट्टा (एजेंसी)। केरल के कलपेट्टा की एक फैमिली कोर्ट में बृहस्पतिवार को बम रखे होने की सूचना से अफरा तफरी मच गई। हालांकि यह जानकारी बाद में फर्जी निकली। पुलिस ने बताया कि अदालत में बम रखे जाने का दावा करने वाला संदेश अदालत के आधिकारिक ईमेल पर प्राप्त हुआ था। अदालत के कर्मचारियों ने इसकी जानकारी तुरंत न्यायाधीश को दी, जिन्होंने वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को सूचित किया। इसके बाद, निरीक्षण के लिए बम निरोधक दस्ते और श्वान दस्ते को तैनात किया गया। हालांकि, पुलिस ने बताया कि गहन तलाशी के बाद कोई विस्फोटक नहीं मिला। पुलिस को दोपहर करीब 12.30 बजे सूचना मिली और उसने तुरंत कार्रवाई की। बता दें कि इसी कड़ी में आज महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को भी जान से मारने की धमकी दी गई है। दरअसल गोरेगांव पुलिस को एक अज्ञात शख्स का ईमेल मिला। इसमें एकनाथ शिंदे की गाड़ी को बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी। मंत्रालय और जेजे मार्ग पुलिस स्टेशन में भी इसी तरह का धमकी भरा मेल आया है।पुलिस धमकी भरा ईमेल भेजने वाले की तलाश कर रही है। बता दें कि फिलहाल एकनाथ शिंदे दिल्ली के दौरे पर हैं। वे रामलीला मैदान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में

शामिल होने के बाद एनडीए नेताओं के साथ बैठक के लिए निकल गए। दिल्ली में आज रेखा गुप्ता ने नए मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली है।

बता दें कि कुछ दिन पहले मुंबई में एक व्यक्ति ने पुलिस नियंत्रण कक्ष को फोन कर दावा किया कि आतंकवादी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश यात्रा के दौरान उनके विमान पर हमला कर सकते हैं। पुलिस ने अन्य एजेंसियों को सूचित कर जांच शुरू की। जिस वक्त यह कॉल आई थी उस वक्त प्रधानमंत्री मोदी फ्रांस की यात्रा पूरी कर अमेरिका जानेवाले थे। फोन करने वाले शख्स ने दावा किया कि आतंकवादी प्रधानमंत्री मोदी की विदेश यात्रा के दौरान उनके विमान पर हमला कर सकते हैं। नियंत्रण कक्ष को धमकियों के संबंध में एक ही नंबर से कई अलग-अलग कॉल आई। जांच में पता चला कि कॉल करने वाला शख्स मानसिक रूप से अस्थिर था।

दिल्ली में मंत्रियों के विभागों का बंटवारा

किस मंत्री को क्या जिम्मेदारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हो गया है। गुरुवार को दिल्ली के उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने रामलीला मैदान में भव्य समारोह में भाजपा विधायक रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। इसके बाद रेखा गुप्ता ने सचिवालय पहुंचकर मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभाल लिया है। बता दें कि रेखा गुप्ता दिल्ली की नौवीं मुख्यमंत्री और चौथी महिला मुख्यमंत्री बनी हैं। रेखा दिल्ली की शालीमार बाग विधानसभा सीट का प्रतिनिधित्व करती हैं।

रेखा गुप्ता के बाद उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने प्रवेश वर्मा, मनजिंदर सिंह सिरसा, कपिल मिश्रा, पंकज सिंह, आशीष सूद और रवींद्र इंद्राज को मंत्री पद की शपथ दिलाई है। आइए जानते हैं कि दिल्ली की नई सरकार में किस नेता को कौन से विभाग की जिम्मेदारी दी जा सकती है।

दिल्ली में मंत्रियों के विभागों का बंटवारा : प्रवेश वर्मा- दिल्ली के डिप्टी सीएम।, सीएम रेखा गुप्ता के पास गृह और वित्त मंत्रालय।, रेखा गुप्ता के पास विजिलेंस

विभाग भी रह सकता है ।, प्रवेश वर्मा को शिक्षा,परिवहन और क्रष्ठ मंत्रालय मिल सकता है, कपिल मिश्रा को जल, पर्यटन,संस्कृत मंत्रालय मिल सकता है।, मनजिंदर सिरसा को स्वास्थ्य मंत्रालय की जिम्मेदारी मिल सकती है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के शपथ ग्रहण समारोह को देखने के लिए गुरुवार को हजारों भाजपा समर्थक विशाल रामलीला मैदान में जमा हुए। क्रष्ठ की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, करीब 50,000 लोग इस भव्य समारोह को देखने के लिए एकत्र हुए थे। बता दें कि 26 साल से अधिक समय बाद दिल्ली की सत्ता में भाजपा की वापसी हुई है।

रोज झटके पर झटके लग रहे हैं, मैं झटका पुरुष हो गया हूं

जानें उद्धव ठाकरे ने ऐसा क्यों कहा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की सियासत में इन दिनों 'ऑपरेशन टाइगर' की चर्चा खूब चल रही है। इस खास 'ऑपरेशन' को लेकर कहा जा रहा है कि शिवसेना के कई नेता महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से हाथ मिला सकते हैं। बता दें कि अभी भी दोनों दलों की जंग थमी नहीं है और दोनों ही खुद को 'असली शिवसेना' कहते हैं। इन सबके बीच 'ऑपरेशन टाइगर' पर उद्धव ठाकरे का बयान भी सामने आया है। उद्धव ने खुद को 'झटका' लगने की बात पर कहा है कि 'मेरी हालत जापान जैसी हो गई है। रोज झटके पर झटके लग रहे हैं। अब मैं झटका पुरुष हो गया हूं।' मातोश्री पर शिवसैनिकों को संबोधित करते हुए उद्धव ठाकरे ने कहा कि देखते हैं कौन कितने झटके देता है, लेकिन जब हम झटका देंगे तो ये दिखेंगे नहीं। बिना नाम लिए शिंदे पर निशाना साधते हुए उद्धव ने कहा, 'मेरी हालत जापान जैसी हो गई है। जापान का आपको पता ही

है। ऐसा कहते हैं कि अगर किसी दिन जापान में भूकंप का झटका नहीं आता है तो लोग हैरान हो जाते हैं। उसी तरह रोज उद्धव ठाकरे को झटके पर झटका, मैं अब झटका पुरुष हो गया हूं। कौन कितने झटके देता है, देखते हैं। लेकिन जब हम झटका देंगे तो ये दिखेंगे नहीं।'

बता दें कि कुछ दिन पहले ही शिंदे ने कहा था कि पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव में लोगों ने दिखा दिया कि असली शिवसेना कौन सी है। शिंदे ने कहा कि विधानसभा चुनाव में शिवसेना 97 सीटों पर चुनाव लड़कर सिर्फ 20 सीटें जीत पाई। उन्होंने कहा कि उनकी शिवसेना ने 87 सीटों पर चुनाव लड़ा, लेकिन 60 सीटें जीतीं और उसे अपनी प्रतिद्वंद्वी से 15 लाख ज्यादा वोट मिले। शिंदे ने कहा,'तो फिर बताएं कि असली शिवसेना कौन सी है? जनता ने दिखा दिया कि असली शिवसेना कौन सी है, जो बाल ठाकरे के आदर्शों पर चलती है।'

महाराष्ट्र के कृषि मंत्री दो साल की सजा, खतरे में विधायकी

नासिक (एजेंसी)। नासिक जिला न्यायालय ने गुरुवार को महाराष्ट्र के कृषि मंत्री माणिकराव कोकाटे और उनके भाई सुनील कोकाटे को साल 1995 में जालसाजी और धोखाधड़ी के एक मामले में दो साल की जेल की सजा सुनाई। माणिकराव कोकाटे के खिलाफ यह मामला पूर्व मंत्री तुकाराम दिघोले ने दर्ज कराया था, जिन्होंने उन पर दस्तावेजों में जालसाजी करने और धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया था। आरोपों के आधार पर भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 420 (धोखाधड़ी), 465 (जालसाजी), 471 (जाली दस्तावेजों का उपयोग) और 47 के तहत मामला दर्ज किया गया था। नासिक जिला न्यायालय ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के अजित पवार गुट के नेता माणिकराव कोकाटे पर 50 हजार का जुर्माना भी लगाया है। जानकारी के अनुसार, अपनी विधायकी और मंत्री पद बचाने के लिए माणिकराव कोकाटे आज ही हाई कोर्ट में नासिक जिला कोर्ट के फैसले के खिलाफ याचिका दाखिल करेंगे। अगर हाई कोर्ट से सजा पर रोक लग जाएगी तो उनकी विधायकी और मंत्री पद बच सकता है वरना उन्हें अयोग्य घोषित किया जा सकता है।

50 मकानों पर चला नगर निगम का बुल्डोजर, रोते-बिलखते रहे लोग, जानिए क्यों किया गया सैकड़ों लोगों को बेघर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर में एक बार फिर अतिक्रमण के नाम पर नगर निगम का बुलडोजर चला है। चिरहुला कॉलोनी के समीप अवैध अतिक्रमण के नाम पर करीब 50 परिवारों के घरों को जमींदोज़ कर दिया हैं। नगर निगम की इस कारवाई के दौरान लोगों ने विरोध भी दर्ज कराया, लेकिन पुलिस बल की मौजूदगी में नगर निगम ने विरोध को दरकिनार करते हुए कच्चे और पक्के मकानों को गिरा दिया। इस दौरान घरों में रहने वाले परिवार रोते-बिलखते रहे। बतादें कि चिरहुला कॉलोनी में पुराने नगर सैनिक कार्यालय के सामने सड़क के किनारे बने आधा सैकड़ा मकानों पर नगर निगम के अतिक्रमण दल ने बुल्डोजर चलाया हैं।

बताया जा रहा है कि यह कारवाई नगर निगम की ओर से अवैध अतिक्रमण पर की गई है, लेकिन मौके पर अतिक्रमण हटाने पहुंचे नगर निगम के अधिकारियों ने कुछ भी कहने और बताने से इंकार कर दिया। इधर कारवाई से दुखी पीड़ित परिवार के बच्चों से लेकर महिलाएं रोती-बिलखती नजर आई तो वहीं पुरुषों ने अपना विरोध भी दर्ज कराया। एक पीड़ित महिला ने बताया कि उन्हें नगर निगम की ओर से किसी भी प्रकार की कोई सूचना नहीं दी गई थी और ना ही नोटिस तामील कराई गई। पीड़िता ने रोते हुए बताया कि बीते कई दिनों से उसने अपने पति को अस्पताल के आईसीयू वार्ड में भर्ती करा रखा है, इस बीच नगर निगम ने उसका घर गिराकर उसके परिवार के ऊपर दुखों का पहाड़ गिरा दिया है।

इधर स्थानीय लोगों की माने तो नगर निगम ने आज तकरीबन 50 परिवारों के घरों को अवैध अतिक्रमण के नाम पर गिरा दिया। बताया जा रहा है कि नगर निगम ने कारवाही से ठीक एक दिन पूर्व, बीती रात घरों को गिराने की मुनादी कराई थी। जबकि ना तो किसी भी प्रकार की नोटिस दी गई और ना ही कोई सूचना। ऐसे में महज मुनादी के बाद घरों को गिराना समझ से परे है।

मंत्री विजयवर्गीय ने छात्रों से किया संवाद

वन नेशन वन इलेक्शन पर हुई चर्चा, बच्चो के सवालों का तर्कपूर्ण दिया जवाब

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के एकेएस विश्वविद्यालय में नगरीय विकास एवं आवास संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने छात्रों से संवाद किया। उन्होंने वन नेशन वन इलेक्शन की अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की। विजयवर्गीय ने बताया कि इस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद थे। कमेटी में चीफ जस्टिस, मुख्य सचिव, आईएएस और आईपीएस अधिकारी शामिल थे। सभी ने देशभर में जाकर एक देश एक चुनाव पर विचार-विमर्श किया।

'जनता की भूमिका सिर्फ वोट डालने तक सीमित नहीं होनी चाहिए': मंत्री ने कहा कि प्रजातंत्र की सफलता के लिए जनता की भूमिका सिर्फ वोट डालने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। देश को जब भी आवश्यकता हो, जनता की राय ली जानी चाहिए। उन्होंने छात्रों के सवालों का तर्कपूर्ण जवाब दिया। विजयवर्गीय ने संविधान का जिक्र करते हुए कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संसद को संविधान में संशोधन का अधिकार दिया है। उन्होंने सुझाव दिया कि 6 महीने चुनाव और साढ़े 4 साल विकास कार्य होने चाहिए।

ये रहे उपस्थित: कार्यक्रम में राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, महापौर योगेश ताम्रकार, विश्वविद्यालय के चांसलर बी.पी. सोनी, कुलपति प्रो. बी.ए. चोपड़े, भाजपा जिलाध्यक्ष भगवती पांडेय और जिला पंचायत की अध्यक्ष सुष्मिता सिंह उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्तर की रेसलिंग रीवा में, आएंगे द ग्रेट खली, देशभर के रेसलर प्रतियोगिता में होंगे शामिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। राष्ट्रीय स्तर की रेसलिंग प्रतियोगिता रीवा के स्पोर्ट्स काम्पलेक्स में दो मार्च को आयोजित की जाएगी। जिसमें डब्ल्यू डब्ल्यू ई के पूर्व चैंपियन द ग्रेड खली भी आएंगे। इस प्रतियोगिता में देश के विभिन्न राज्यों से 25 प्रतिभागी शिरकत करेंगे। सायं छह बजे से रात्रि के दस बजे तक यह प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। कार्यक्रम का आयोजन द ग्रेट खली की कंपनी कांटिनेंटल रेसलिंग इंटरटेनमेंट द्वारा किया जा रहा है। खली की एकेडमी से रेसलिंग सीखकर डब्ल्यू डब्ल्यू ई से जुड़े रीवा के प्रांजय सिंह बाघेल भी रेसलिंग में हिस्सा लेंगे।

प्रांजय ने बताया कि मध्यप्रदेश में रेसलिंग का माहौल तैयार करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। जिसके तहत 24 फरवरी को छतरपुर के बागेश्वरधाम में, 28 फरवरी को इंदौर में और दो मार्च को रीवा के स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में रेसलिंग प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता में सबसे अधिक हरियाणा और दिल्ली के रेसलर आएंगे। उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों की भी सहभागिता होगी। मध्यप्रदेश से केवल प्रांजय सिंह बाघेल ही शामिल होंगे। रीवा में पहली बार आयोजित किए जा रहे इस कार्यक्रम की तैयारियां तेज कर दी गई हैं।

रीवा के बड़े कॉलेज में नकल का वीडियो वायरल होने के बाद की गई बड़ी कार्रवाई, मुश्किल में फंसा प्रबंधन

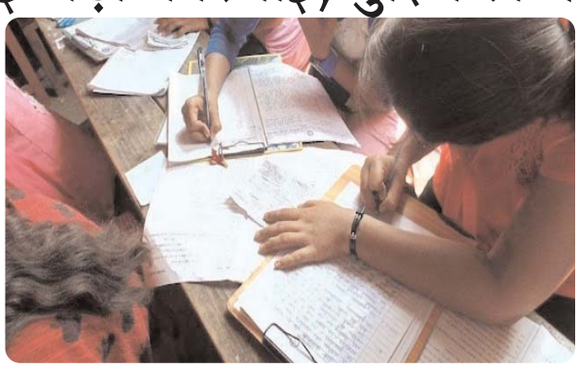

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही परीक्षा में खुले तौर पर नकल किए जाने का वीडियो वायरल होने के मामले में जांच शुरू कर दी गई है। यह वीडियो चाकघाट के नेहरू स्मारक कालेज का बताया गया था। वीडियो की सत्यता का पता करने के लिए भोज मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. आरएन तिवारी एवं अन्य सदस्य जांच के लिए चाकघाट पहुंचे। जहां पर करीब दो घंटे से अधिक समय तक कालेज प्रबंधन के साथ बैठक कर जानकारी ली। परीक्षा का वीडियो वायरल होने की वजह से तत्काल प्रभाव से नेहरू स्मारक महाविद्यालय का परीक्षा केन्द्र निरस्त करते हुए अगली परीक्षाएं त्योंथर के शासकीय महाविद्यालय में कराए जाने का आदेश जारी किया है। वहीं नेहरू स्मारक कालेज प्रबंधन का कहना है कि पुराना वीडियो है लेकिन वीडियो वायरल करने वाले शख्स ने कहा है कि एक दिन पहले का वीडियो है। वर्तमान में परीक्षा चल रही है जहां पर खुलेआम नकल कराई जा रही है। परीक्षा दे रहे छात्रों ने वीडियो में भी बताया था कि इसके लिए एक से डेढ़ हजार रुपए प्रति छात्र की दर से रुपए दिए गए हैं। कुछ तो दूसरों के नाम पर भी परीक्षा देते पाए गए थे।

कालेज प्रबंधन ने वीडियो को फेक बताया: जांच अधिकारियों से कालेज प्रबंधन ने वीडियो को फेक बताया है और दावा किया है जो परीक्षार्थी वीडियो में दिखाए जा रहे हैं वह उनके कालेज में नहीं हैं। इतना ही नहीं जो उत्तर पुस्तिकाएं हैं वह भी उनके कालेज की नहीं हैं। हालांकि जांच अधिकारियों ने वायरल वीडियो के आधार पर उक्त कक्ष का सत्यापन किया है। साथ ही प्रश्नावली बनाकर दी है और कहा है कि उनके आधार पर जवाब प्रस्तुत करें। यदि कक्ष कालेज का है तो बाहरी छात्र वहां पर कैसे आए इसकी जानकारी दें। इसके साथ ही वीडियो के सत्यता की जांच कराए जाने की भी बात कही गई है।

आंख के ऑपरेशन से पहले खाई दवा, बुजुर्ग की मौत, परिजनों ने किया हंगामा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में 65 वर्षीय बुजुर्ग की अचानक मौत हो गई। आरोप है कि एक निजी नेत्रालय में आंख के ऑपरेशन से पहले दी गई दवा से मौत हुई। मृतक की पहचान कुलवंत सिंह रंधावा के रूप में हुई है। वह सिंधी कैंप पंजाबी गुरुद्वारा के पीछे रहते थे।

गुरुवार को कुलवंत को भरहूत नगर स्थित ओजस नेत्रालय में भर्ती कराया गया था। दोपहर 12 बजे डॉक्टर आशीष गुप्ता ने जांच के बाद 2 घंटे में ऑपरेशन करने की बात कही। करीब डेढ़ घंटे बाद डॉक्टर ने कुलवंत को दो टैबलेट दीं। टैबलेट खाते ही उनका शरीर अकड़ने लगा।

ऑटो से बिड़ला अस्पताल लेकर पहुंची बेटी: मरीज की हालत बिगड़ती देख बेटी डिम्पी ने मदद के लिए आवाज लगाई। डॉक्टर और स्टाफ ने बिना कोई इलाज किए बिड़ला अस्पताल ले जाने को कहा। नर्सिंग होम स्टाफ ने वाहन की व्यवस्था करने से भी मना कर दिया। डिम्पी अपने पिता को ऑटो से बिड़ला अस्पताल ले गई। वहां डॉक्टरों ने कुलवंत को मृत घोषित कर दिया।

परिजनों ने किया हंगामा: परिजनों ने डॉक्टर पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए नर्सिंग होम में हंगामा किया। कोतवाली पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया। टीआई सुदीप सोनी के अनुसार, परिजनों की शिकायत पर मामले की जांच की जा रही है। शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है।

टैक्स जमा नहीं करने वाले प्रतिष्ठानों में नगर निगम ने शुरू की बड़ी कार्रवाई, पूर्व में दिए गए थे नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगर निगम को संपत्तिकर सहित अन्य टैक्स का भुगतान नहीं करने वाले बकायादारों के यहां अब तालाबंदी की प्रक्रिया शुरू की गई है। बुधवार को नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारियों की टीमें शहर के अलग-अलग हिस्सों में पहुंची और प्रमुख बकायादारों के यहां तालाबंदी की गई। शहर के वार्ड क्रमांक 15 में सूर्या कार बाजार की रामकली साकेत पर सम्पत्तिकर का बकाया 3 लाख 82 हजार 432 रुपए, अनिल दुबे पर सम्पत्तिकर 68 हजार 251 रुपए, अवध बिहारी दुबे पर बकाया 69 हजार 956 रुपए एवं वार्ड 25 में सरोज सोनी पर बकाया सम्पत्तिकर 61 हजार 256 रुपए जमा नहीं करने पर इनके प्रतिष्ठानों में तालाबंदी कर सील कर दिया गया है। इस बीच जिन क्षेत्रों में नगर निगम की टीम ने तालाबंदी की कार्रवाई की वहां पर मौजूद दूसरे बकायादारों ने अपने यहां कार्रवाई से बचने के लिए रुपए लेकर पहुंचे और स्वयं जमा कराने की मांग उठाई। जिन लोगों ने मौके पर राशि जमा की उनके प्रतिष्ठानों पर तालाबंदी नहीं की गई है।

साथ ही अन्य को चेतावनी दी गई है कि हर बकायादार से राजस्व की वसूली की जाएगी और जो भी राशि समय पर जमा नहीं करेगा उसके यहां तालाबंदी की जाएगी। राजस्व अधिकारी रावेन्द्र सिंह ने बताया निगम आयुक्त के निर्देशानुसार तालाबंदी की कार्यवाही लगातार जारी रहेगी। सभी करदाताओं से अपील की जा रही है कि सभी प्रकार के बकाया कर निर्धारित समय में जमा कर, अप्रिय कार्यवाही से बचें। उक्त कार्यवाही के दौरान नगर निगम की टीम में राजस्व अधिकारी रावेंद्र सिंह, नीलेश चतुर्वेदी, राजस्व उपनिरीक्षक सुधांशू विश्वकर्मा, शकील अंसारी, सहायक राजस्व निरीक्षक चिंतामणि तिवारी, अभिलाष प्रजापति एवं ज्ञानेंद्र सिंह एवं अन्य राजस्व अमला मौजूद रहा।

गौरादेवी की देह मेडिकल कालेज को सौंपी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। देहदान को सबसे उत्तम दान ओर जगत कल्याण के लिए महादान माना जाता हे क्योंकि दुनिया से मनुष्य की विदाई के बाद भी मृत शरीर किसी को जिन्दगी के काम आती हे संत मोतीराम स्वास्थ्य सेवा केंद्र द्वारा चलाई जा रही स्वास्थ्य सेवाओं एवं आश्रम के महंत स्वामी खिम्यादास जी द्वारा जगाई देहदान की अलख ज्योति से प्रेरित होकर अपनी मृत्यु के बाद मानवता के लिए देहदान का संकल्प लेने वाली श्रीमती गौरा देवी त्रिपाठी ग्राम भरी उटरा निवासी का 20 फरवरी गुरुवार को निधन हो गया उनके पति राम लखन त्रिपाठी एवं पुत्र प्रदीप एवं नवल किशोर त्रिपाठी व परिवार के सदस्यों ने माता द्वारा लिए गए संकल्प को पूरा करते हुए उनका अंतिम संस्कार ना करके पार्थिक देह को सतना मेडिकल कॉलेज को सौंप दिया ताकि मेडिकल के विद्यार्थी अध्ययन कर सकें।

समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के लिए किसान करा सकेंगे पंजीयन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग द्वारा जारी निर्देश के अनुर म में रबी विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जित करने के लिए किसानों की सुविधा हेतु निर्धारित पंजीयन स्थानों/तरीकों से पंजीयन कराया जा सकेगा। जिला आपूर्ति अधिकारी एलआर जांगडे ने बताया कि जिले में निःशुल्क व्यवस्था अंतर्गत 43 सेवा सहकारी समितियों के पंजीयन केन्द्र निर्धारित किये गये है। जिसमें ग्राम पंचायत कार्यालय में स्थापित सुविधा केन्द्र, जनपद पंचायत कार्यालयों में, तहसील कार्यालयों में, सहकारी समितियों एवं विपणन संस्थाओं द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्र तथा एमपी किसान ऐप पर पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था की गई है। इसी प्रकार सशुल्क व्यवस्था अंतर्गत एमपी आनलाइन, कियोस्क, कॉमन सर्विस सेंटर, लोक सेवा केन्द्र और निजी व्यक्तियों द्वारा संचालित साइबर कैफे के माध्यम से किसानों द्वारा स्वयं के पंजीयन कराये जा सकेंगे।

प्राईवेट स्कूलों की नवीन मान्यता/ नवीनीकरण के आवेदन 25 तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के निर्देशानुसार शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत सत्र 2025-26 के लिए प्रायवेट स्कूलों की नवीन मान्यता के लिए अंतिम तिथि में वृद्धि कर दी गई है। जिला परियोजना समन्वयक ने बताया कि विलम्ब शुल्क के साथ आवेदन करने की अंतिम तिथि 25 फरवरी कर दी गई है। इसके उपरांत मान्यता आवेदन मान्यता आवेदन करने की तिथि में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं की जा सकेगी। सभी ऐसे समस्त प्राइवेट स्कूल जिनकी मान्यता 31 मार्च 2025 को समाप्त हो रही है। मान्यता नवीनीकरण एवं नवीन मान्यता आवेदन की अंतिम तिथि 25 फरवरी तक अनिवार्य रूप से करें।

ट्रैफिकिंग की रोकथाम व सुरक्षित प्रवासन के लिए एक मंच पर आए दक्षिण एशिया के संगठन

मीडिया ऑडीटर, नई दिल्ली एजेंसी। मौजूदा समय में दुनिया भर में जारी असुरक्षित प्रवासन के संकट के मद्देनजर नई दिल्ली में नौ दक्षिण एशियाई देशों की सरकारों, नीति-निर्माताओं, कानून प्रवर्तन एजेंसियों, संयुक्त राष्ट्र और नागरिक समाज संगठनों के प्रतिनिधियों ने "ह्यूमन ट्रैफिकिंग (मानव दुर्व्यापार) के खिलाफ सुरक्षित प्रवासन को प्रोत्साहन के लिए दक्षिण एशियाई संगोष्ठी" में शिरकत की। एसोसिएशन फॉर वालंटरी एक्शन की पहल पर इस एकदिवसीय संगोष्ठी में समग्र, अधिकार-आधारित रणनीति को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया, जिससे कि पूरे क्षेत्र में प्रवासन नीतियों का समन्वय किया जा सके और अंतरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय मानकों के अनुरूप कानूनी और नीतिगत सुधार किए जा सकें। इस संगोष्ठी में भारत के अलावा बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के ट्रैफिकिंग के पीड़ित भी मौजूद थे जिन्होंने अपनी पीड़ा और अनुभव साझा करते हुए इसकी रोकथाम के लिए सुझाव दिए। बाल अधिकारों और बाल संरक्षण के लिए दुनिया के 39 देशों में कार्यरत संगठनों का वैश्विक नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन इस परामर्श का तकनीकी सहयोगी था।

ट्रैफिकिंग के खिलाफ तत्काल एक बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता पर जोर देते हुए जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन के संस्थापक भुवन ऋभु ने कहा, "मानव दुर्व्यापार भारी मुनाफे वाला एक संगठित अपराध है, जो विशेष रूप से बच्चों और मजबूर युवाओं के शोषण के सहारे फल-फूल रहा है। इससे निपटने के लिए हमें बहु-आयामी रणनीति अपनाने की आवश्यकता है जिसमें ट्रैफिकिंग के आर्थिक ढांचे को नेस्तनाबूद करना, संगठित आपराधिक गिरोहों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई से उनकी कमर तोड़ना और ट्रैफिकिंग गिरोहों के बारे में सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए वैश्विक रजिस्टर रखना और इसके माध्यम से स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खुफिया समन्वय को मजबूत करने जैसे कदमों की जरूरत है।"

राजस्व और वन विभाग के साथ समन्वय बनाकर सिंचाई परियोजनाओं की बाधाओं को दूर कराते हुए गुणवत्ता पूर्ण कार्य करें : कमिश्नर

कमिश्नर ने जल संसाधन विभाग की संभाग में निर्माणाधीन परियोजनाओं की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, सतना/रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने संभाग में जल संसाधन विभाग अंतर्गत स्वीकृत व निर्माणाधीन सिंचाई परियोजनाओं की अद्यतन स्थिति की समीक्षा के दौरान निर्देश दिए कि राजस्व और वन विभाग के साथ समन्वय बनाकर बाधाओं को दूर करते हुए गुणवत्ता पूर्ण कार्य कराएं।

कमिश्नर कार्यालय में आयोजित बैठक में कमिश्नर ने लंबित मुआवजा वितरण की जिलेवार समीक्षा करते हुए कहा कि भू अर्जन की राशि विभाग एक सप्ताह में जमा करे तथा तीन सप्ताह में राशि का शत प्रतिशत भुगतान संबंधित को हो जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि अधिग्रहीत भूमि को अधिपत्य में लेने के बावजूद भी जहां कार्य प्रारंभ नहीं हुए हैं वहां तत्काल कार्य प्रारंभ करें तथा अधिग्रहीत भूमि का अमल दरामत करने के लिए जल संसाधन विभाग अभियान चलाकर एक सप्ताह में कार्यवाही करे। कमिश्नर ने बैठक में जल संसाधन विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी अधिकारी साइट का भ्रमण करें तथा वहां संबंधित रजिस्टर में कार्य की प्रगति सहित उपस्थिति का विवरण दर्ज करें। मझगवां ब्रांच कैनाल के कार्य की धीमी प्रगति पर कमिश्नर ने नाराजगी व्यक्त की तथा निर्देश दिए कि निर्माण एजेंसी तत्काल कार्य को गति दे। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही क्षम्य नहीं होगी। उन्होंने सिंगरौली के कार्यपालन यंत्री सीएस तिवारी का वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों से समन्वय न बनाने से परियोजना में धीमी प्रगति रहने पर दो वेतन वृद्धियां रोकने के निर्देश दिए।

बैठक में वर्चुअली जुड़ते हुए संभागान्तर्गत जिलों के कलेक्टर्स ने कहा कि लंबित मुआवजा प्रकरणों की बाधाओं को दूर कर मॉनिटरिंग करते हुए सिंचाई परियोजनाओं के कार्य समय सीमा में पूर्ण कर लिए जाएंगे। कलेक्टर रीवा श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि त्योंथर फ्लो के अधिग्रहित भूमि के नक्शे तरमीम हो चुके हैं। विभाग इनमें अमल करे। सतना कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एसजी ने दोहरी सागर, पाथर कछार, झमरहा बांध परियोजनाओं में आने वाली बाधाओं को तत्परता से निराकृत करने की बात कही। बैठक में सीधी जिले की महान परियोजना, बहरी नहर, मैहर जिले के शारदा सागर तथा घुनवारा बांध, सिंगरौली जिले में गोड़ परियोजना और रीवा जिले की बहुती व नईगढ़ी परियोजना में आ रही रूकावटों को दूर करने के निर्देश दिए गये। बैठक में व्हीसी के माध्यम से सीधी कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, सिंगरौली कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला, मैहर कलेक्टर रानी बाटड सहित जिलों के वन मंडलाधिकारी तथा राजस्व अधिकारी जुड़े। कमिश्नर कार्यालय में बैठक में मुख्य अभियंता जल संसाधन एके डेहरिया, संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले, अधीक्षण यंत्री हरीश तिवारी, आरपी सिंह सहित कार्यपालन यंत्री, सहायक यंत्री व निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

जादू-टोने के शक में महिला की पीट-पीटकर हत्या

देवर का परिवार घर से उठा ले गया, लाठी-डंडों से मारा, पति-बेटे, पोते को भी पीटा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी में जादू-टोने के शक में लाठी-डंडों से पीट-पीटकर बुजुर्ग महिला की हत्या कर दी गई। इससे पहले आरोपियों ने महिला के लकवाग्रस्त पति को पीटा। बचाने पहुंचे बेटे और पोते को भी पीटा। दोनों की हालत गंभीर है।

घटना कुसमी के ग्राम पिपरहा की है। बुधवार रात करीब 8 बजे ग्राम मेडरा से आए पुष्पराज, दिलीप, संतोष, अजय सिंह और इंद्रभान सिंह, महिला चिराऊंजिया सिंह (80) के घर में घुस गए। चिराऊंजिया के पति श्रीमान सिंह को देखकर हमला कर दिया।

आरोपी बुजुर्ग महिला को घर से एक किलोमीटर दूर पिपरहा मोहल्ले में ले गए। यहां उसे इतना पीटा कि उसने दम तोड़ दिया। जानकारी मिलने पर चिराऊंजिया का बेटा उदयभान सिंह और पोता पृथ्वीराज सिंह मौके पर पहुंचे तो उनसे भी मारपीट की। आरोपी महिला के देवर के बेटे हैं।

बहू बोली- पांच लोगों ने मिलकर हमला किया: मृतक महिला की छोटी बहू आराधना सिंह ने बताया, पांच लोगों ने मिलकर ससुरालवालों पर हमला किया। आरोपी मेडरा से आए थे। कुसमी थाना प्रभारी भूपेश बैस ने बताया कि सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीमें लगातार छापेमारी कर रही हैं।

चाचा के परिवार ने किया हमला: मृतक महिला के बड़े बेटे उदयभान सिंह ने बताया, चाचा के पोते समर बहादुर सिंह की एक दिन पहले महाराष्ट्र में मौत हुई थी। 18 फरवरी को अंत्येष्टि की गई। चाचा के परिवार को शक था कि मां ने जादू-टोना किया, इस कारण समर की मौत हो गई। अगले दिन उन लोगों ने घर में घुसकर हमला कर दिया।

ग्रामीणों के आने पर भागे आरोपी: उदयभान सिंह ने बताया, रात करीब 8 बजे मां को कुछ लोग उठाकर ले गए। पड़ोसियों ने मुझे इसकी सूचना दी। मैं बेटे के साथ मौके पर पहुंचा। 5-6 लोग मां को लाठी-डंडों से पीट रहे थे। बचाने गए तो हमसे भी मारपीट की। इस दौरान काफी लोग आ गए। उन्हें देखकर आरोपी भाग गए।

पड़ोसी सत्यवान ने बताया कि 18 फरवरी को इंद्रभान ने अपने बेटे समर की अंत्येष्टि में जादू-टोने का आरोप लगाया था। इससे पहले दोनों परिवार में कोई विवाद नहीं था।

चोरी की शिकायत करने वाले परिवार पर उल्टा केस

पड़ोसी पर संदेह जताया तो पिता की पिटाई, पुलिस ने पीड़ित को ही बना दिया आरोपी

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर जिले के सिविल लाइन थाना क्षेत्र में एक परिवार को चोरी की शिकायत करना भारी पड़ गया। संदेह के आधार पर पड़ोसी का नाम लेने पर आरोपियों ने पीड़ित परिवार के बुजुर्ग की पिटाई कर दी और पुलिस ने उल्टा शिकायतकर्ता परिवार पर ही मामला दर्ज कर दिया।

घटना 17 फरवरी की है। नई ईदगाह वार्ड 14 निवासी मोहम्मद खतीव अपनी बहन नाजरीन और पत्नी कौसर का इलाज कराने दोपहर 3 बजे घर से निकले थे। जब वे शाम 4 बजे लौटे तो देखा कि घर का अंदरूनी ताला टूटा था और सामान बिखरा पड़ा था। चोरों ने 60 हजार रुपए नकद और करीब 50 हजार रुपए के सोने के जेवरात चोरी कर लिए थे।

शिकायत दर्ज कराते समय पुलिस ने संदेह के आधार पर नाम पूछे तो पीड़ित परिवार ने एक पड़ोसी का नाम लिया। युवक का कहना है कि 18 फरवरी की सुबह मोहम्मद खतीव के पिता मोहम्मद अजीज घर पर अकेले थे, तभी मोहम्मद शानू, उसकी पत्नी अनीशा खातून और दो अन्य लोगों ने उन पर हमला कर दिया। हमलावरों ने लात-घूंसों और ईंट-पत्थरों से पिटाई कर दी।

इसके बाद, आरोपियों ने थाने में झूठी शिकायत देकर उल्टा पीड़ित परिवार के खिलाफ ही मामला दर्ज करवा दिया। अब पीड़ित परिवार ने एसपी से न्याय की गुहार लगाई है और चोरी के सामान की बरामदगी तथा आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। सिविल लाइन थाना प्रभारी वाल्मीकि चौबे ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है और जल्द उचित कार्रवाई की जाएगी।

बजरंग दल ने सीएमएचओ का पुतला फूंका

जिला अस्पताल में व्यवस्था को लेकर विरोध, सोमवार तक सुधार की मांग

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर जिला अस्पताल में चल रही कथित अनियमितताओं के विरोध में बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने गुरुवार शाम को सीएमएचओ का पुतला दहन किया। कार्यकर्ताओं ने अस्पताल प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

जिला संयोजक सूरज सिंह के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने अस्पताल के मुख्य द्वार पर प्रदर्शन किया। उन्होंने अस्पताल प्रबंधन पर ब्लड बैंक में अनियमितता और एंबुलेंस सेवाओं में कथित भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। प्रदर्शनकारियों ने लेबर वार्ड में होने वाली कथित अनियमितताओं का भी मुद्दा उठाया।

सुधार नहीं हुआ तो कड़ा विरोध प्रदर्शन करेंगे: बजरंग दल ने चेतावनी दी है कि यदि सोमवार तक अस्पताल की व्यवस्थाओं में सुधार नहीं होता है, तो वे और कड़ा विरोध प्रदर्शन करेंगे। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने सीएमएचओ विरोधी नारे भी लगाए।

स्विफ्ट को ट्रक ने कई बार मारी टक्कर

ड्राइवर फरार, पेट्रोल पंप के सामने खड़ी कार को जानबूझकर नुकसान पहुंचाया

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले में एक ट्रक ड्राइवर ने सड़क किनारे खड़ी स्विफ्ट कार को जानबूझकर नुकसान पहुंचाया है। घटना अमलाई थाना क्षेत्र के एनएच 43 के बटूरा पेट्रोल पंप के सामने गुरुवार सुबह करीब 4 बजे की है।

सीसीटीवी फुटेज में दिख रहा है कि कोतमा से बुढ़ार की तरफ जा रहा ट्रक चालक पहले कार को टक्कर मारता है। इतने से ही नहीं रुकता। वह यू-टर्न लेकर वापस आता है। फिर बैक करके एक बार और कार को टक्कर मारता है। घटना के समय व्हाइट कलर की स्विफ्ट कार (एमपी 18 सीए 3179) में कोई नहीं था।

कर्मचारी ने ड्राइवर को रोकने की कोशिश की: टक्कर की आवाज सुनकर पेट्रोल पंप का एक कर्मचारी मौके पर पहुंचा। उसने ट्रक ड्राइवर को रोकने की कोशिश की, लेकिन वह कार को क्षतिग्रस्त कर फरार हो गया। घटना को देखकर लग रहा है कि ट्रक ड्राइवर का कार मालिक से कोई पुराना विवाद हो सकता है।

अमलाई थाना प्रभारी जेपी शर्मा ने बताया कि स्थानीय लोगों ने क्षतिग्रस्त कार के बारे में सूचना दी है। लेकिन अभी तक कोई औपचारिक शिकायत नहीं मिली है। शिकायत मिलने के बाद ही जांच शुरू की जाएगी।

मालगाड़ी के 4 डिब्बे पटरी से उतरे

रेलवे की टीम ने डेढ़ घंटे में लाइन क्लियर की

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर से करीब 45 किमी दूर बिजुरी रेलवे स्टेशन पर गुरुवार दोपहर करीब 1 बजे राजनगर साइडिंग से आ रही मालगाड़ी के चार डिब्बे प्लेटफॉर्म नंबर 3 के पास पटरी से उतर गए। घटना की सूचना मिलते ही आरपीएफ, जीआरपी, रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी पहुंच गए। 2.30 बजे तक लाइन क्लियर कर दी गई।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर के जनसंपर्क अधिकारी अंबिकेश साहू ने बताया कि हादसे के कारणों का पता लगाने के लिए जांच की जाएगी।

बाड़ी के विवाद में महिला पर जानलेवा हमला

सीधी के पास मधुरी पवाई की घटना, चाचा ससुर सहित पांच आरोपियों पर केस

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी से 10 किमी दूर मधुरी पवाई गांव में बाड़ी के विवाद ने गुरुवार को हिंसक रूप ले लिया। निर्मला विश्वकर्मा नाम की महिला पर उनके ही चाचा ससुर और उनके बेटों ने लाठी और धारदार हथियार से हमला कर दिया। घटना गुरुवार दोपहर करीब 1 बजे की है।

घटना की शिकार निर्मला विश्वकर्मा ने बताया कि वह कई साल से अपनी बाड़ी बनाए हुए थीं। परिवार के कुछ सदस्यों ने इस पर आपत्ति जताई। इसी बात को लेकर विवाद बढ़ गया। आरोपियों ने पहले उनके सिर पर लाठी से वार किया और फिर धारदार हथियार से उनके हाथ पर हमला कर दिया। शोर सुनकर पहुंचे ग्रामीणों ने बीच-बचाव कर उन्हें बचाया।

जमोड़ी थाना प्रभारी दिव्य प्रकाश त्रिपाठी ने तत्काल कार्रवाई करते हुए पांच आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। आरोपियों में रामानुज विश्वकर्मा, विजय विश्वकर्मा, बैजनाथ विश्वकर्मा, सत्यम विश्वकर्मा और शुभम विश्वकर्मा शामिल हैं।

पुलिस ने बताया कि मामले की जांच जारी है। कानूनी कार्रवाई की जाएगी। घायल महिला का प्राथमिक उपचार कराया गया है।

बिल्ली के हमले से घायल 22 वर्षीय युवक की मौत

दो-तीन दिन इलाज नहीं कराया, जब तबीयत बिगड़ी तो पहुंचा अस्पताल

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के अमलाई में बिल्ली के हमले से घायल 22 साल के युवक की मौत हो गई। युवक ने दो-तीन दिन हमले को हलके में लिया। उसने इलाज नहीं कराया, जब उसकी तबीयत बिगड़ने लगी तो वह बुढ़ार के सेंट्रल हॉस्पिटल पहुंचा। वहां से उसे शहडोल मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया, लेकिन उसकी जान नहीं बच सकी।

मृतक का नाम दीपक कोल था। वह चीफ हाउस में रहता था। उसके घर में एक बिल्ली का आना-जाना था। 10 फरवरी को बिल्ली ने अचानक दीपक पर पंजा मार दिया। दीपक ने शुरुआत में इस चोट को गंभीरता से नहीं लिया। कुछ दिनों बाद उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। उसकी हालत इतनी खराब हो गई कि उसे घर से बाहर निकलने में परेशानी होने लगी। पहले उसके बुढ़ार के सेंट्रल हॉस्पिटल ले गए। वहां स्थिति गंभीर होने पर शहडोल मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। मेडिकल कॉलेज में इलाज के बाद उसे घर लाया गया। 19 फरवरी को उसकी मौत हो गई। यह जानकारी दीपक के पड़ोसी सुनील गुप्ता ने दी।

तीन पुलिसकर्मियों ने दुकानदार को डंडों से पीटा

देर रात दुकान बंद कराने पर विवाद, युवक बोला- सामान भी तोड़ा

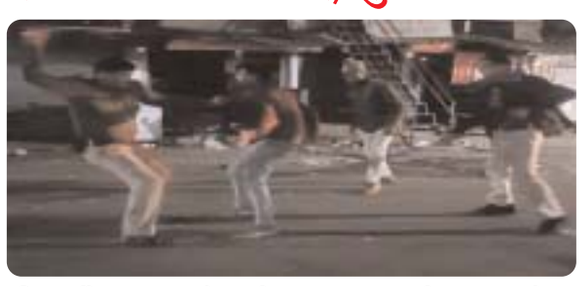

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में बुधवार रात पुलिसकर्मियों ने दुकानदार के साथ मारपीट कर दी। सिटी कोतवाली क्षेत्र के बस स्टैंड पर रात करीब 11 बजे पुलिसकर्मियों ने दुकानदार से दुकान बंद करने को कहा। इस बात को लेकर दोनों में विवाद हो गया। पुलिस के अनुसार, इस दौरान दुकानदार ने एक पुलिसकर्मी को धक्का दे दिया, इससे वह गिर गया। इसके बाद तीन पुलिसकर्मी वहां पहुंचे।

उन्होंने दुकानदार को पकड़कर सड़क पर डंडों से पीटा। यह मारपीट करीब 10 मिनट तक चली। आसपास के लोगों ने इस घटना का वीडियो बना लिया। वीडियो में तीन पुलिसकर्मी दुकानदार को गाली-गलौज करते हुए पीट रहे हैं। दुकानदार पुलिस से गिड़गिड़ाता दिख रहा है।

दुकानदार का आरोप- पुलिसकर्मियों ने सामान तोड़कर मारपीट की: दुकानदार अभिषेक चौरसिया ने आरोप लगाया कि बुधवार रात करीब 10:50 बजे वह दुकान बंद कर रहा था, तभी तीन पुलिसकर्मी आए। उन्होंने पहले दुकान का सामान तोड़ा। फिर उसे पीटना शुरू कर दिया। पुलिसकर्मी कह रहे थे कि, दुकान क्यों खोल कर रखी है।

टीआई बोले- समझाइश के बाद छोड़ा: मामले में सिटी कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद कुजूर ने बताया कि घटना के बाद दुकानदार को समझाने के लिए थाने लाया गया था। समझाइश के बाद उसे छोड़ दिया गया।

बुंदेलखंड महोत्सव के तहत सख्त सुरक्षा व्यवस्था: बता दें कि, बागेश्वर धाम में चल रहे बुंदेलखंड महोत्सव के तहत जिले में सख्त सुरक्षा व्यवस्था है। यहां 19 से 26 फरवरी तक 251 कन्याओं का विवाह कार्यक्रम चल रहा है। 23 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कैंसर अस्पताल का शिलान्यास करेंगे। वहीं 26 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू कन्याओं को आशीर्वाद देंगी।

बुढ़ार का जर्जर महावीर द्वार गिराया, जैन समाज में नाराजगी, भगवान महावीर के 2500वें जन्म उत्सव वर्ष में यह उचित नहीं

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। बुढ़ार नगर का ऐतिहासिक महावीर द्वार अब नहीं रहा। स्थानीय प्रशासन ने जर्जर हो चुके इस द्वार को जेसीबी से गिरा दिया। यह कार्रवाई सुरक्षा कारणों से की गई। द्वार का एक पाया बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुका था।

स्थानीय लोगों ने कई बार प्रशासन को द्वार की खराब स्थिति की जानकारी दी थी। तेज हवा के झोंकों से द्वार के गिरने का खतरा बना हुआ था। कार्रवाई के दौरान नगर पंचायत और पुलिस मौके पर मौजूद रही। सुरक्षा के लिहाज से मार्ग को पहले ही बंद कर दिया गया था। वाहनों को वैकल्पिक मार्ग से भेजा गया।

जैन समाज के लोगों ने इस कार्रवाई पर नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि भगवान महावीर के 2500वें जन्म महोत्सव वर्ष में यह उचित नहीं है। पूर्व विधायक जय सिंह मरावी ने द्वार के पुनर्निर्माण की घोषणा की थी, लेकिन अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

नगरवासियों की मांग है कि नगर की पहचान रहे इस प्रथम द्वार का जल्द से जल्द पुनर्निर्माण किया जाए। प्रशासन ने द्वार को गिराने के बाद मलबा हटाकर मार्ग को यातायात के लिए खोल दिया है।

मुख्यमंत्री मछुआ समृद्धि योजना अंतर्गत लाभ लेने करें आवेदन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सहायक संचालक मत्स्योद्योग ने जानकारी देकर बताया कि मुख्यमंत्री मछुआ समृद्धि योजना अंतर्गत सीधी जिले में नवाचार के रूप में झींगा पालन की गतिविधियों को बढ़ावा देने, मत्स्य विक्रय के लिए स्मार्ट फिश पार्लर की स्थापना तथा प्रशिक्षण हेतु संचालनालय मत्स्योद्योग मध्यप्रदेश, भोपाल से भौतिक एवं वित्तीय लक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

उन्होंने बताया कि ऐसे व्यक्तिगत मत्स्य पालक, ग्रामीण तालाबों के पट्टाधारक, स्व सहायता समूह, मछुआ सहकारी समितियां जो प्रशिक्षण प्राप्त कर ग्रामीण तालाबों में झींगा पालन का कार्य करने हेतु इच्छुक हैं उन्हें शासन द्वारा आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी जाएगी। हितग्राही जो इस योजना का लाभ प्राप्त करना चाहते हैं शीघ्र अपना आवेदन कार्यालय सहायक संचालक मत्स्योद्योग जिला सीधी वीथिका परिसर (कलेक्ट्रेट के सामने) में कार्यालीन समय में जमा कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए दूरभाष नंबर 8889026748 या 7692001789 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

किसान सम्मान समारोह 24 को

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। संयुक्त कलेक्टर ने जानकारी देकर बताया है कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 19वीं किस्त का वितरण प्रधानमंत्री जी द्वारा 24 फरवरी को भागलपुर, बिहार राज्य से किया जाना है। 19वीं किस्त वितरण दिवस को "किसान सम्मान समारोह" के रूप में मनाया जाना है।

उन्होने समस्त अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं तहसीलदारों को निर्देशित किया है कि शासन के निर्देशानुसार कार्यक्रम का आयोजन सुनिश्चित करें। विधायक/सांसद सहित अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधियों को जिला/ब्लाक स्तर पर विधिवत आमंत्रित किया जाये एवं प्रोजेक्टर/बड़ी स्क्रीन के माध्यम से प्रसारण किया जाये। जिले की ग्राम पंचायतों में कार्यक्रम के प्रसारण की व्यवस्था कर कार्यक्रम का प्रसारण किया जाय। सभी पटवारी इस कार्यक्रम से वर्चुअली सम्मिलित होंगे एवं हल्का, ग्राम अंतर्गत सभी कृषकों को कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु प्रेरित करेंगे। साथ ही पी.एम.किसान में ई-केवाईसी, आधार खाता लिंकिग एवं लैंड लिंकिग का अवलोकन करने संबंधी जानकारी कृषकों को प्रदान करेंगे। अधिक से अधिक कृषकों का पंजीयन प्लेटफार्म मायजीओव्ही के माध्यम से कराया जाकर कार्यक्रम से लाईव जुड़ने हेतु अवगत कराया जाये। कार्यक्रम में जुड़ने हेतु वीडियो कान्फ्रेंसिंग लिंक का उपयोग सुनिश्चित किया जाये।

सोशल मीडिया पर हथियार दिखाने वाले गिरफ्तार

छतरपुर में दो कट्टे और एक धारदार हथियार के साथ तीन आरोपी पकड़े

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर पुलिस ने रात्रि गश्त के दौरान तीन आरोपियों को अवैध हथियारों के साथ गिरफ्तार किया है। इनमें से एक आरोपी सलमान उर्फ छोटे राइन ने सोशल मीडिया पर हथियार के साथ अपनी फोटो वायरल की थी।

पुलिस ने कड़ा की बारिया से सलमान को 315 बोर देसी कट्टे के साथ पकड़ा। महोबा रोड फोरलेन ब्रिज के पास से मस्ताना राइन को भी 315 बोर देसी कट्टे के साथ गिरफ्तार किया गया। तीसरा आरोपी बृजेंद्र उर्फ दादू खटीक को किशोर सागर तालाब के पास से एक लोहे के धारदार हथियार के साथ पकड़ा गया।

सिटी कोतवाली टीआई अरबिंद कुजूर ने बताया कि अवैध हथियार रखने वालों के खिलाफ लगातार कार्रवाई की जा रही है। पिछले कुछ दिनों में छतरपुर जिले में करीब 250 और थाना कोतवाली क्षेत्र में 50 लोगों को अवैध हथियारों के साथ गिरफ्तार किया गया है।

तीनों का पुराना आपराधिक इतिहास: तीनों आरोपियों का आपराधिक इतिहास भी है। मस्ताना राइन पर अवैध हथियार रखने का, सलमान राइन पर मारपीट का और बृजेंद्र खटीक पर चोरी के दो मामले पहले से दर्ज हैं। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ आयुध अधिनियम के तहत अलग-अलग मामले दर्ज कर लिए हैं। साथ ही हथियारों के स्रोत की जानकारी जुटाई जा रही है।

कटे-फटे होंठ एवं तालु का शिविर संपन्न

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। डीईआईसी मैनेजर पुष्पेंद्र शुक्ला ने बताया कि गुरुवार को जिला चिकित्सालय के डीईआईसी में सीएमएचओ डॉ बबिता खरे के मार्गदर्शन में बर्थ डिफेक्ट के चिन्हित कटे फटे होठ एवं तालु के बच्चों का निःशुल्क शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 28 बच्चों का पंजीयन हुआ, जिनमें से 10 बच्चे कटे-फटे होंठ एवं तालु के थे, तीन बच्चे क्लब फुट थे और दो बच्चे ट्यूमर के थे। शेष बच्चे अन्य समस्याओं के थे।

इन बच्चों के लिए आवश्यक व्यवस्था की गई, जिसमें 10 बच्चों को दुबे सर्जिकल हॉस्पिटल जबलपुर के लिए सर्जरी हेतु बस से रवाना किया गया।

जिला जेल में बंदियों को हथकरघा का दिया गया प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। प्रभारी जिला ग्रामोद्योग अधिकारी ने जानकारी देकर बताया है कि वर्ष 2024-25 में हाथकरघा एवं हस्तशिल्प क्षेत्रों के लिए कौशल एवं तकनीकी विकास योजनान्तर्गत जिला जेल सीधी में बंदी कैदियों को 03 दिवसीय एक जिला एक उत्पाद अन्तर्गत पंजा दरी का प्रशिक्षण हाथकरघा ग्रामोद्योग जिला पंचायत सीधी द्वारा 17 फरवरी से 19 फरवरी तक जिला जेल में इच्छुक 37 बंदी कैदियों को प्रशिक्षण दिया गया। अधीक्षक जिला जेल सीधी द्वारा इस प्रशिक्षण से प्रसन्नता व्यक्त किया गया। रमेश प्रसाद ओझा प्रशिक्षण प्रभारी जिला जेल एवं जगलाल प्रजापति संत रविदास म.प्र. हस्तशिल्प एवं हाथकरघा विकास निगम सीधी एवं विजय कुमार केवट सहायक वर्ग 03 हाथकरघा ग्रामोद्योग सीधी एवं जमीर अध्यक्ष रोजी बुनकर सहकारी समिति मर्यादित हटवादेवार्थ तहसील सिहावल एवं गुलफान मोहम्मद मास्टर ट्रेनर एवं रघुबंश साकेत मास्टर ट्रेनर द्वारा सफलता पूर्वक प्रशिक्षण सम्पन्न कराया है।

विचार

मन्दिरों एवं धर्म-स्थलों में वीआईपी संस्कृति समाप्त हो

मन्दिरों, धर्मस्थलों एवं धार्मिक आयोजनों में वीआईपी संस्कृति एवं उससे जुड़े हादसों एवं त्रासद स्थितियों ने न केवल देश के आम आदमी के मन को आहत किया है, बल्कि भारत के समानता के सिद्धान्त की भी धज्जियां उड़ा दी है। मौनी अमावस्या महाकुंभ में भगदड़ के चलते तीस लोगों की मौत ने ऐसे मौकों पर कुछ विशेष लोगों को मिलने वाले वीआईपी सम्मान एवं सुविधा पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। बात केवल महाकुंभ की नहीं है, बल्कि अनेक प्रतिष्ठित मन्दिरों में वीआईपी संस्कृति के चलते होने वाले हादसों एवं आम लोगों की मौत ने अनेक सवाले खड़े किये हैं। प्रश्न है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पहले ही कार्यकाल के दौरान वीआईपी कल्चर को खत्म करते हुए लालबत्ती एवं ऐसी अनेक वीआईपी सुविधाओं को समाप्त कर दिया था तो मन्दिरों एवं धार्मिक आयोजनों की वीआईवी संस्कृति को क्यों नहीं समाप्त किया? क्यों महाकुंभ में वीआईपी स्नान के लिये सरकार ने अलग से व्यवस्थाएं की। क्यों एक विधायक अपने पद का वैभव प्रदर्शित करते हुए महाकुंभ में कारों के बड़े काफिले के साथ घूमते एवं स्नान करते हुए, पुलिस-सुविधा का बेजा इस्तेमाल करते हुए एवं सेल्फी लेते हुए करोड़ लोगों की भीड़ का मजाक बनाते रहे? सवाल यह पूछा जा रहा है कि हिंदुओं के धार्मिक स्थलों और आयोजनों में क्यों भक्तों के बीच भेदभाव होता है? वीआईपी दर्शन की अवधारणा भक्ति एवं आस्था के खिलाफ है। यह एक असमानता का उदाहरण है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी आघात करती है। महाकुंभ हो या मन्दिर, धार्मिक आयोजन हो या कीर्तन-प्रवचन भगदड़ के कारण जो दर्दनाक हादसे होते रहे हैं, जो असंख्य लोगों की मौत के साक्षी बने हैं, उसने वीआईपी कल्चर पर एक बार फिर से नये सिरे से बहस छेड़ दी है। सवाल उठ रहा है कि जब गुरुद्वारे में वीआईपी दर्शन नहीं, मस्जिद में वीआईपी नमाज नहीं, चर्च में वीआईपी प्रार्थना नहीं होती है तो सिर्फ हिन्दू मंदिरों में कुछ प्रमुख लोगों के लिए वीआईपी दर्शन क्यों जरूरी है? क्या इस पद्धति को खत्म नहीं किया जाना चाहिए, जो हिंदुओं में दूरिया का करण बनता है? योगी सरकार ने मौनी अमावस्या के दिन हुए हादसे से सबक लेते हुए भले ही वीआईपी सिस्टम पर रोक लगायी हो, लेकिन इस रोक के बावजूद महाकुंभ में वीआईवी संस्कृति बाद में भी पूरी तरह हावी रही है। महाकुंभ हो या प्रसिद्ध मन्दिर वीआईपी पास एवं दर्शन की व्यवस्था समाप्त क्यों नहीं होती? यह व्यवस्था समाप्त होना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 7 जनवरी को ही धार्मिक स्थलों पर होने वाली वीआईपी व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े किये हैं। उन्हें ऐसे हासदे की उम्मीद भी नहीं रही होगी। निश्चित ही जब किसी को वरीयता दी जाती है और प्राथमिकता दी जाती है तो उसे वीवीआईपी या वीआईपी कहते हैं।

आखिर भारत का असली दुश्मन कौन?

कमलेश पांडे

जब ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा दलील देते हैं कि भारत को चीन को अपना दुश्मन नहीं मानना चाहिए, तो सवाल पैदा होता है कि आखिर इंडिया गठबंधन के मुय घटक समाजवादी पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष और तत्कालीन रक्षा मंत्री मुलायम सिंह यादव ने चीन को भारत का दुश्मन नबर वन यों करार दिया था? दरअसल, 1962 के भारत-चीन युद्ध से लेकर 2020 के गलवान घाटी हिंसक झड़प तक, क्रमशः उसके पहले या इसके बाद भारत को लेकर चीन के जो अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार दिखते आए हैं, उससे तो यही प्रतीत होता है कि चीन भारत का मजबूत दुश्मन है। नेहरू-मोदी की मित्रता की भावना को उसने कुचला है। हालांकि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से पता चलता है कि भले ही ईसाईयत और इस्लाम से सभाव्य मुकाबले के लिए हिंदुत्व (भारत) को बुद्धत्व (चीन) की जरूरत पड़ेगी, लेकिन इसके लिए दोनों देशों को समझदारी भरी दूरदर्शिता दिखानी पड़ेगी, अन्यथा वैश्विक परिस्थितियों की धर्माध चक्की में दोनों देश पिसे जाएंगे और युगों-युगों तक पछताएंगे।

इसलिए स्वाभाविक सवाल है कि भारत का असली दुश्मन कौन है? तो जवाब होगा कि भारत के कई दुश्मन हैं और इसके कारण भी अलग-अलग हैं। जहां तक राजनीतिक नजरिए और भौगोलिक सीमाओं का सवाल है तो चीन हमारा दुश्मन नम्बर वन है। वहीं, पाकिस्तान दुश्मन नम्बर 2, बंगलादेश दुश्मन नम्बर 3, नेपाल दुश्मन नम्बर 4, श्रीलंका दुश्मन नम्बर 5, मालदीव दुश्मन नम्बर 6, म्यामांर दुश्मन नम्बर 7, अफगानिस्तान दुश्मन नम्बर 8 और भूटान दुश्मन नम्बर 9 हैं। इन सबकी दांवपेंच भरी नीतियों से भारत किसी न किसी रूप में परेशान रहता है, क्योंकि अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, रूस और पश्चिमी देशों के शह पर ये भारत विरोधी नीतियों पर बहुधा अमल करते आए हैं।

वहीं, सांस्कृतिक नजरिए से हिन्दू विरोधी होने के कारण कट्टर इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध आदि के आंतरिक गठजोड़ भी भारत के लिए आस्तीन के सांप जैसे हैं। क्योंकि पाकिस्तान, तुर्किये, ईरान आदि की शह पर कभी मुस्लिम देशों के संघ द्वारा, तो कभी ईसाई देशों के संघ द्वारा और इनके धर्मांध कारोबारियों द्वारा भारत के खिलाफ षड्यंत्र रचे जाते हैं। साथ ही जैसे भारतीय मूल वाले सिख धर्म से जुड़े विदेशी लोगों को कनाडा-यूएसए द्वारा, दलित बौद्धों को चीन द्वारा भड़काया जाता है, अलगाववाद को बढ़वाया जाता है, वह भी भारत के भविष्य से दुश्मनी जैसा ही है। क्योंकि इनको शह देने वाले मुल्क भारत के हिंदुओं की जातीय और क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काकर न केवल धर्मांतरण करवाते हैं, बल्कि गृह युद्ध के बीज भी यत्र-तत्र-सर्वत्र बुनते रहते हैं। दलित-ओबीसी साहित्य, साम्प्रदायिक इतिहास को शह आदि इनके सांस्कृतिक औजार बन चुके हैं। वहीं, अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में गुटनिरपेक्षता, सत्य व अहिंसा से अभिप्रेरित वसुधैव कुटुंबकम, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया जैसी उदात्त सोच से ग्लोबल साउथ मतलब तीसरी दुनिया के देशों के हितों की वकालत के चलते भी पश्चिमी राष्ट्र कनाडा, इंग्लैंड, जर्मनी, इटली आदि भारत से कभी प्रत्यक्ष और कभी परोक्ष शत्रुता रखते आए हैं। हालांकि, कड़वा सच यह है कि भारत के असली शत्रु हमारे मूढ़ राजनेता हैं, जो %महाभारत% काल से अभिप्रेरित सार्थक नीतियों को प्रश्रय देने तथा राष्ट्रवाद-हिंदूवाद को संरक्षित करने के बजाय पश्चिमी लोकतंत्र प्रेरित उस क्षुद्र धर्मनिरपेक्षता की वकालत करते आए हैं जो एक अंतर्राष्ट्रीय नैतिक महामारी समझी जाती है। चूंकि इसके सिद्धांत और व्यवहार में काफी अंतर दुनिया के देशों में पाया जाता है, इसलिए एशियाई संदर्भ में यह धर्मनिरपेक्षता भारत की प्राचीन सनातन संस्कृति को कुचलने का एक बौद्धिक हथियार समझी जाती है। इसके अलावा दलित-महादलित, पिछड़ा-अत्यंत पिछड़ा की जातीय अवधारणा, आदिवासी और आर्य के अंतर्राष्ट्रीय विभेद, अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के धार्मिक विभेद, भाषाई क्षेत्रवाद और एक समान कानून बनाने के बजाय आभिजात्य वर्गों के हितों के मुताबिक कानून निर्माण और इनको लेकर बहुमत-अल्पमत की आत्मघाती राजनीति ऐसे संवैधानिक सवाल हैं जिसका विवेकसम्मत समाधान हमारे राजनेताओं को देना चाहिए लेकिन वह पीछे 75 साल में वह इस मामले में विफल रहे हैं। इस नजरिए से संविधान संरक्षण को लेकर अविवेकी न्यायिक हठ और कुतर्क भी एक बड़ी वजह है जिससे धर्मनिरपेक्षता जैसी टुच्ची सोच लाभान्वित है। वहीं जातीयता आदि विधि व्यवस्था के सवाल पर प्रशासनिक पूर्वाग्रह भी एक राजनैतिक त्रासदी ही है। इसलिए भारत के इस असली शत्रु को यदि हमलोग पहचान लिए, वैदिक संस्कृति के मुताबिक यहां के जनमानस को ढाल लिए, राजनीतिक अश्वमेध यज्ञ की पुनः शुरुआत कर लिए, तो भारत के जितने भी प्रत्यक्ष या परोक्ष शत्रु हैं, सबके दांत खट्टे किए जा सकते हैं। निःसन्देह, बदलते विश्व की यही डिमांड भी है, जिसको लेकर भारत के लोगों के बीच सांस्कृतिक व राजनीतिक जागरूकता फैलाने की जरूरत है। इससे अखण्ड भारत यानी महाभारत के सपनों को पुनः हासिल करना आसान हो जाएगा। हमारा देश विश्व गुरु और सोने की चिड़िया बन जाएगा। अब बात पुनः सैम पित्रोदा के बयानों की। ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने भले ही एक इंटरव्यू में कहा कि चीन से खतरे को अक्सर बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है। इसलिए भारत को चीन को अपना दुश्मन मानना बंद कर देना चाहिए। ऐसा करके उन्होंने भाजपा और सपा दोनों पर निशाना साध दिया। सपा तो मित्रतापूर्ण सम्बन्धों के चलते चुप रही लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने उनके बयान आलोचना की है। लिहाजा, पित्रोदा के बयान के बाद कांग्रेस बैकफुट पर आ गई है। इस बीच पार्टी ने उनके बयान से खुद को अलग कर लिया है। इस संबंध में कांग्रेस के महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, सैम पित्रोदा के चीन पर व्यक्त किए गए कथित विचार कांग्रेस के विचार नहीं हैं।

सवाल है कि चीन के बारे में पित्रोदा का नजरिया ऐसा इसलिए है क्योंकि भाजपा भी चीन को लेकर अक्सर ढुलमुल ही रही है। तभी तो ब्रेक के बाद मोदी-चिनफिंग मिले और बंगलादेश जैसा भारत विरोधी कुकाण्ड हो गया। इसलिए चीन के सवाल पर भाजपा-कांग्रेस में कोई ज्यादा अंतर नहीं है। चाहे इनकी राजनीतिक दलीलें पित्रोदा को लेकर कुछ भी हो। हां, उनके चीन सम्बन्धी बयानों से कांग्रेस की सहयोगी समाजवादी पार्टी की ईर्ष्या जरूर बढ़ेगी।

चूंकि कांग्रेस इंडिया गठबंधन की अगुवाई कर रही है और यूपी में सपा के साथ उसके रिश्ते भी उतार-चढ़ाव भरे सियासी दांवपेंच वाले होते हैं, तो क्या यह समझा जाए कि पित्रोदा का यह बयान भी समाजवादी पार्टी की मौलिक विदेश नीति पर करारा तमाचा है। क्योंकि यूपी के कद्दावर मुख्यमंत्री रहे स्व. मुलायम सिंह यादव के पुत्र और सपा प्रमुख अखिलेश यादव, पूर्व मुख्यमंत्री, यूपी के राजनीतिक पैंतरों से अक्सर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी परेशान रहा करते हैं। यूपी के दो लड़के के नाम से मशहूर यह सियासी जोड़ी जब एकजूट रहती है तो कभी सफल तो कभी विफल होती है।

चूंकि सैम पित्रोदा राहुल गांधी के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकारों में शुमार किये जाते हैं, इसलिए उनके ताजा बयानों को एक तीर से कई शिकार करने की सियासी कवायद समझा जा रहा है। राजनीति में यही होता भी आया है। अमेरिका से लेकर चीन तक और भारत से जुड़े विभिन्न सुलगते सवालों पर सैम पित्रोदा अपनी अटपटी बयानबाजियों के लिए मशहूर रहे हैं। इसलिए कभी कांग्रेस उन्हें अपनी पार्टी से हटाती है तो कभी ससम्मान लाकर ओवरसीज कांग्रेस सम्बन्धी पुरानी जिम्मेदारियों को थोप देती है।

बता दें कि यह पहला मौका नहीं है, जब उन्होंने इस तरह का विवादित बयान दिया हो। दरअसल उनके विवादित बयानों के फेहरिस्त लंबी है। उनके सात अटपटे बयान निम्नलिखित हैं, जिनमें से कुछ पर उन्होंने माफी भी मांगी है।

पहला, मई 2024 में सैम पित्रोदा पिछले साल द स्टेट्समैन को दिए एक इंटरव्यू में कहा भारतीय नागरिकों की तुलना चीनी, अफ्रीकी, अंग्रेजों और अरबों से की थी। उन्होंने अपने इंटरव्यू में कहा कि हम भारत जैसे विविधतापूर्ण देश को जोड़ कर रख सकते हैं, जहां पूर्वोत्तर राज्यों में लोग चीनी जैसे दिखते हैं, पश्चिम भारत में लोग अरब जैसे दिखते हैं, उत्तर के लोग व्हाइट जैसे दिखते हैं और दक्षिण भारतीय अफ्रीकी जैसे दिखते हैं। दूसरा, अप्रैल 2024 में उन्होंने इनडायरेक्ट रुप में अमेरिका में लगाए जाने वाले विरासत टैक्स की वकालत करते हुए कहा था कि अमेरिका में इनहेरिटेंस टैक्स लगता है। इसके तहत अगर किसी के पास 100 मिलियन डॉलर की संपत्ति है और वह मर जाता है, तो वह केवल 45 प्रतिशत प्रॉपर्टी ही अपने बच्चों को ट्रांसफर कर सकता है। बाकी 55 फीसदी संपत्ति सरकार ले लेती है।

माधव सदाशिव राव गोलवलकर- शक्तिशाली भारत के कल्पक

प्रवीण गुगनानी

श्री गुरुजी, माधव सदाशिव राव गोलवलकर, शक्तिशाली भारत की अवधारणा के अद्भुत, उद्भट व अनुपम संवाहक थे। वे भारत की सौम्यता, अनेकता में एकता, समरसता के मर्मज्ञ थे। श्री गुरुजी के संदर्भ में थे शब्द कहना सर्वथा अनुचित होगा, वे आज भी हमारे मध्य; पराक्रमी भारत, ओजस्वी भारत, अजेय भारत, निर्भय भारत, संपन्न-समृद्ध-स्वस्थ भारत व राष्ट्रवाद भाव के झर-झर बहते निर्झर झरने बने हुए हैं। वे शक्तिशाली भारत के अग्रदूत, संवाहक, प्रणेता के रूप में आज भी हमारे मध्य हैं, एक वैचारिक मूर्ति के रूप में। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी के संदर्भ में, शक्तिशाली भारत की अवधारणा के संवाहक, भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी पुस्तक श्रीगुरूजी एक स्वयंसेवक में लिखते हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना सन 1925 में डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने की थी, लेकिन इसे वैचारिक आधार द्वितीय सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर 'श्रीगुरुजी' ने प्रदान किया था। द्वितीय विश्वयुद्ध, भारत छोड़ो आंदोलन, आजाद हिंद फौज और नेताजी का देश की आजादी में योगदान, भारत विभाजन, देश की आजादी, कश्मीर विलय, गांधी हत्या, देश का पहला आम चुनाव, चीन से भारत की हार, पाकिस्तान के साथ 1965 व 1971 की लड़ाई; भारत का इतिहास बदलने और बनाने वाली इन घटनाओं के महत्त्वपूर्ण काल में न केवल श्रीगुरुजी संघ के प्रमुख थे, बल्कि अपनी सक्रियता और विचारधारा से उन्होंने इन सबको प्रभावित भी किया था। शक्तिशाली भारत की श्री गुरुजी की अवधारणा को अटलबिहारी वाजपेयी व नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बनी हुई कोई आधा दर्जन केंद्रीय सरकारों ने मात्र ही स्वीकार नहीं किया; अपितु, इस अवधारणा को उन्होंने अपना गीता-रामायण माना हुआ है। शक्तिशाली राष्ट्र की गुरुजी की अवधारणा को स्वतंत्रता संघर्ष के मध्य ही कांग्रेस ने, व स्वतंत्रता के पश्चात बनी हुई नेहरूजी व शास्त्रीजी की सरकारों ने भी स्वीकार किया है। यद्दपि नेहरू ने तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगाने व श्री गुरुजी को जेल में बंदी बनाने जैसा पाप भी किया था किंतु इसके बाद उन्होंने गोलवलकर गुरुजी का अभिनंदन करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को वर्ष 1963 की गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लेने हेतु आमंत्रित भी किया था।

वस्तुतः श्री गुरुजी के नेतृत्व काल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बढ़ती लोकप्रियता, स्वीकार्यता, मान्यता को देखकर नेहरूजी के हृदय में कुटिलता व डाह के भाव आने लगे थे। नेहरू जिस प्रकार की छुद्र, अंग्रेज-मुस्लिम परस्त राजनीति किया करते थे; श्रीगुरुजी उसके विरुद्ध थे। नेहरू जी ने संघ व श्रीगुरुजी को अपनी सत्ता के प्रति आसन्न असुरक्षा के भाव से ग्रसित होकर ही गांधीजी की हत्या के बाद श्रीगुरुजी को गिरफ़्तार कर संघ को प्रतिबंधित किया था। गांधी जी की हत्या व हत्या के आरोप में संघ पर प्रतिबंध लगाना, आज भी एक उनसुलझा रहस्य ही है। इस रहस्य का एक सूत्र गांधीजी की हत्या के ठीक एक दिन पूर्व के नेहरू के एक भाषण में भी है, जिसमें नेहरू ने संघ को कुचलने की बात कही थी। नेहरू जी का संघ को कुचलने वाला भाषण देना, चौबीस घंटे के भीतर गांधी जी की हत्या होना और संघ पर प्रतिबंध लगाकर श्रीगुरूजी को गिरफ़्तार कर लेना; एक अनसुलझी गुत्थी ही है। गांधी जी की हत्या व इस संदर्भ में संघ पर प्रतिबंध, यह पहेली, क़ानूनी दृष्टि से असुलझी लग सकती है किंतु भीतरखाने के सच

जानने वाले तत्कालीन राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता इस संदर्भ में दबी जबान बहुत कुछ कहा-सुना करते थे।

विकसित भारत की नेहरू की परिकल्पना पर श्रीगुरूजी का शक्तिशाली भारत की योजना; कल्पक, अत्यंत भारी, परिणामकारी व युगांतरकारी है। श्री गुरुजी की यह योजना, नेहरू की अंग्रेज व मुस्लिम परस्त नीतियों पर बहुत भारी पड़ती हुई दिखने लगी थी। सार्वजनिक चौक-चौराहों, सड़क-संसद, मठ-मंदिर, व्यावसायिक परिसरों आदि सर्वत्र स्थानों पर श्री गुरुजी की शक्तिशाली भारत की योजना की चर्चा में भारतीय न केवल रुचि लेने लगे थे, अपितु, श्रीगुरूजी के प्रति भारतीयों में श्रद्धा का वातावरण बनता जा रहा था। यह सब तब था जबकि, श्रीगुरूजी का प्रत्यक्ष राजनीति से कोई सीधा संबंध नहीं था। नेहरू जी को भय था कि, देश के आगामी प्रथम लोकसभा चुनाव में उनकी सर्वोच्चता को केवल तीन लोग चुनौती दे सकते थे; वे तीन व्यक्ति थे ङ्क पहले श्री गुरुजी, गांधीजी व बाबासाहेब अंबेडकर जी। इन तीनों के प्रति नेहरूजी ने तरह-तरह की ज्ञात-अज्ञात दुरभिसंधियाँ की थीं।

श्रीगुरूजी के कृतित्व को नेहरू जी व भारत की समूची जनता ने, भारत-कश्मीर विलय में उनकी भूमिका से देख लिया था। प्रसिद्ध लेखक, संदीप बोमजाई, -डसइक्यिलीब्रियम = वेन गोलवलकर रेसक्यूड हरि सिंह में लिखते हैं, सरदार पटेल की पहल पर श्रीगुरूजी ने 18 अक्तूबर, 1947 को महाराजा हरि सिंह से भेंट की और विलय को संभव बनाया। महाराजा हरिसिंह ने गोलवलकर से कहा, मेरा राज्य पूरी तरह से पाकिस्तान पर निर्भर है। कश्मीर से बाहर जाने वाले सभी रास्ते रावलपिंडी और सियालकोट से गुज़रते हैं। मेरा हवाई अड्डा लाहौर है। मैं भारत से किस तरह संबंध रख सकता हूँ। श्री गुरुजी ने उनसे कहा, आप हिंदू राजा हैं। पाकिस्तान के साथ विलय के बाद आपकी हिंदू प्रजा पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा। सही है कि आपका भारत के साथ इंफ़्रा विकसित नहीं है किंतु इसे बनाया जा सकता है। आपके कश्मीर के हित में अच्छा यही होगा कि आप भारत के साथ अपने राज्य का विलय कर लें। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कश्मीर में जो इंफ़्रास्ट्रक्चर निर्मित कर रहे हैं, वह श्री गुरुजी के इन विचारों का क्रियान्वयन ही है। अरुण भटनागर की पुस्तक, इंडियाः शेडिंग द पास्ट, एम्ब्रेसिंग द फ्यूचर, 1906-2017 में भी श्रीगुरुजी की कश्मीर विलय में भूमिका, का उल्लेख है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में श्रीगुरुजी की शक्तिशाली भारत की अवधाणा से लोग ऐसे प्रभावित होने लगे थे कि उनके प्रति श्रद्धा का ज्वार उमड़ने लगा था। 1965 के भारत चीन युद्ध में भी, प्रधानमंत्री शास्त्रीजी ने, श्रीगुरुजी से नीतिगत व सामरिक विषयों पर परामर्श करके निर्णय लिए थे। जनप्रिय प्रधानमंत्री अटलजी तो श्रीगुरूजी के समकक्ष कभी कुर्सी पर नहीं बैठते थे व नीचे ही स्थान ग्रहण करते थे।

गोवा के भारत विलय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका उनकी शक्तिशाली भारत की अवधारणा का ही परिणाम था। गोवा मुक्ति आंदोलन में उस समय कांग्रेस सरकार की भूमिका राष्ट्रहित की पीठ में ही छुरा घोंपने वाली थी। गुरुजी ने तब कहा था, गोवा में पुलिस कार्रवाई करने और गोवा को मुक्त कराने का इससे ज्यादा अच्छा अवसर कोई नहीं आएगा। भारत सरकार ने गोवा मुक्ति आन्दोलन का साथ न देने की घोषणा करके मुक्ति आन्दोलन की पीठ में छुरा मारा है। भारत सरकार को चाहिए कि भारतीय नागरिकों पर हुए इस अमानुषिक गोलीबारी का प्रत्युत्तर दे और मातृभूमि का जो भाग अभी तक विदेशियों की दासता में सड़ रहा है, उसे अविलम्ब मुक्त करने के उपाय करे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व वामपंथियों में मूलतः वैचारिक मतभेद है व कम्युनिस्ट स्वभावतः ही संघ को पानी पी पी कर कोसते रहे हैं। श्रीगुरूजी अपनी शक्तिशाली भारत की अवधारणा के प्रति इतने समर्पित थे कि वे कम्युनिस्ट्स के प्रति भी राष्ट्रहित में समन्वय की दृष्टि रखते थे। श्रीगुरूजी कार्ल मार्क्स के प्रति कहा करते थे कि, भारतीय कम्युनिस्ट्स ने कार्ल मार्क्स के साथ अन्याय किया है। मार्क्स केवल भौतिकतावादी नहीं थे, वे नीतिशास्त्र में भी विश्वास रखते थे। श्रीगुरुजी मानते थे कि, कार्ल मार्क्स को क्रूड मटेरियलिस्टिक मानना भारतीय कम्यूनिस्टों की बड़ी भारी गलती है ।श्रीगुरूजी शक्तिशाली भारत के अपने विचार के क्रियान्वयन हेतु सभी वैचारिक पद्धतियों के सत्व-सार को खोजते व उससे समन्वय बनाते दिखते थे।

बच्चा नहीं होने पर दूसरी पत्नी को पेट्रोल डालकर जलाया

मॉर्निंग वॉक पर ले गया, फिर लगाई आग, 75% तक झुलसी

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरबा में पति ने अपनी दूसरी पत्नी भावना को जिंदा जलाकर मारने का प्रयास किया है। भावना की शादी के 6 साल बाद भी उसे कोई संतान नहीं हुई। इस बात को लेकर गोपाल आए दिन भावना के साथ विवाद करता था। आज (गुरुवार) सुबह मॉर्निंग वॉक के बहाने गोपाल भावना को बाहर ले गया और उसे पेट्रोल डालकर जिंदा जलाने का प्रयास किया। यह घटना कटघोरा थाना क्षेत्र के ढेलवाडीह की है।

इस घटना में भावना 75 प्रतिशत झुलस गई। उसे कोरबा के मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती किया गया है, जहां उसका इलाज चल रहा है।

पहली पत्नी की हो चुकी है मौत: आरोपी गोपाल की पहली पत्नी की 6 साल पहले बीमारी के कारण मौत हो गई थी। गोपाल की पहली पत्नी भी निसंतान थी। पहली पत्नी की मौत के बाद गोपाल ने बांगो की रहने वाली भावना से शादी की थी। बच्चा नहीं होने के कारण गोपाल भावना से अक्सर मारपीट किया करता था। उसे उसके मायके भी कई बार छोड़ आया था।

धोखे से बाहर ले जाकर वारदात को दिया अंजाम: कटघोरा थाना क्षेत्र के ढेलवाडीह के रहने वाले किराना व्यवसायी गोपाल अग्रवाल ने अपनी पत्नी भावना अग्रवाल से चक चकवा पहाड़ पर जाकर मॉर्निंग वॉक करने की बात कही। इसके बाद गोपाल ने पत्नी भावना को कार में बिठाया और चक चकवा पहाड़ की ओर चल दिए।

लेकिन गोपाल उसे चक चकवा पहाड़ की बजाय देलवाडीह की दिशा में ले आया। वहां उसने कार में रखे पेट्रोल से भावना के ऊपर पेट्रोल डालकर उसे आग के हवाले कर दिया और उसे मुक्तिधाम के पास फेंककर वहां से फरार हो गया।

मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने भावना को तड़पते देखा: जब सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने ढेलवाडीह कॉलोनी के दुर्गा पंडाल के पास भावना को बुरी तरह जली हुई हालत में तड़पते देखा तो तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने भावना को फौरन अस्पताल दाखिल कराया, जहां उसका इलाज चल रहा है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीतीश ठाकुर के अनुसार, पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है। मौके पर फोरेंसिक टीम को बुलाया गया है। मामले की हर दिशा में जांच की जा रही है।

ओवरस्पीड बस ने 3 साल के मासूम को रौंदा, मौत

गुस्साए ग्रामीणों ने किया जमकर हंगामा, ड्राइवर को पकड़कर पीटा

मीडिया ऑडीटर, बालोद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में रनचीरई थाना क्षेत्र के ग्राम बेलटिकरी में बुधवार शाम 7:30 बजे एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। सुमित ट्रेवल्स की तेज रफ्तार बस ने तीन साल के मासूम जाहिद भारती, पिता प्रदीप भारती को कुचल दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना के बाद स्थानीय ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया और उन्होंने सड़क पर उतरकर हंगामा किया।

कसौंदा की फैक्ट्री में चलती थी बस: प्राप्त जानकारी के अनुसार, यह बस ग्राम कसौंदा स्थित एक निजी फैक्ट्री में मजदूरों को लाने-ले जाने का काम करती थी। वाहन तेज रफ्तार में था जिससे चालक कंट्रोल नहीं कर पाया। वहीं, बच्चा रोड तक कैसे पहुंचा इसकी भी जांच की जा रही है।

ग्रामीणों में आक्रोश, चालक की पिटाई: दुर्घटना के बाद गुस्साए ग्रामीणों ने बस चालक को पकड़कर उसकी पिटाई कर दी। साथ ही, वे मुआवजे की मांग को लेकर देर रात तक प्रदर्शन करते रहे। घटना की सूचना पाकर एसडीओपी और थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों को शांत कराने का प्रयास किया।

टीआई ने बस को किया जब्त: रनचीराई थाना प्रभारी राधा बोरकर ने बताया कि बस को जब्त कर लिया गया है और मृतक बच्चे का पोस्टमार्टम किया जा रहा है। वहीं, प्रशासन ने आश्वासन दिया है कि दोषी चालक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

गांव में शोक, परिवार का रो-रोकर बुरा हाल: मासूम जाहिद भारती की मौत से उसके परिवार में कोहराम मच गया है। पिता प्रदीप भारती और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। गांव में भी शोक की लहर दौड़ गई है और लोग इस हादसे से गहरे सदमे में हैं।

मुआवजे की मांग, प्रशासन की ओर से कोई घोषणा नहीं: ग्रामीणों ने मृतक के परिवार को आर्थिक सहायता देने की मांग की है। हालांकि, प्रशासन की ओर से अब तक मुआवजे को लेकर कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

खंभे से टकराई कार, 2 फोटोग्राफर की मौत

एक पश्चिम बंगाल, दूसरा कोरबा का रहने वाला था, ओवरस्पीड बनी हादसे की वजह

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में बुधवार देर रात एक तेज रफ्तार कार खंभे से जा टकराई। हादसा इतना भीषण था कि, एयरबैग खुलने के बावजूद 2 युवक की मौके पर ही मौत हो गई। कार के परखच्चे उड़ गए। हादसे की वजह ओवर-स्पीड बताई जा रही है। घटना विधानसभा थाना इलाके की है।

जानकारी के मुताबिक, मरने वालों की पहचान संदीप राय (28) निवासी पश्चिम बंगाल और दीपक साहू निवासी कोरबा के रूप में हुई है। दोनों शंकर नगर में किराए के मकान में रहकर फोटोग्राफर का काम करते थे। पुलिस दोनों के परिजनों से संपर्क कर रही है। फिलहाल, शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

4 दिन पहले गैंगरेप, अब नाबालिग लड़की ने लगाई फांसी

सुसाइड नोट में लिखा- बॉयफ्रेंड ने कमरे में बुलाया, दोस्तों संग मिलकर दुष्कर्म किया

मीडिया ऑडीटर, भिलाई (एजेंसी)। भिलाई में 17 साल की लड़की ने गैंगरेप के बाद घर पर फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली है। कमरे में सुसाइड नोट मिला है, जिसमें उसने आदी बारले (19) और उसके दोस्तों पर गैंगरेप करने का आरोप लगाया है। लड़की के मोबाइल में कई ऑडियो रिकॉर्डिंग भी मिले हैं, जिसमें 16 फरवरी को गैंगरेप का जिक्र है। घटना के दो दिन बाद रविवार 18 फरवरी को उसने सुसाइड किया है।

आदी और नाबालिग के बीच जून से प्रेम प्रसंग चल रहा था। उसने कई महीने तक लड़की के साथ संबंध बनाए। परिजनों ने बेटी को ब्लैकमेल करने की बात भी कही है। वहीं पुलिस अब आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। हालांकि, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट, सुसाइड नोट और अन्य सबूतों की जांच के बाद ही चीजें स्पष्ट हो पाएंगी।

ये है पूरा मामला: आदी बारले और नाबालिग लड़की एक ही मोहल्ले में रहते थे, दोनों के बीच प्यार का मामला था। पिछले कई महीनों से वे एक दूसरे से फोन पर बातें करते और वॉट्सअप में चैट करते थे। धीरे-धीरे उनके बीच नजदीकियां इतनी बढ़ गईं कि आदी ने लड़की को अकेले कमरे में बुलाना शुरू कर दिया।

जब नाबालिग उससे मिलने पहुंची तो उसने उसे प्यार और जीवन भर साथ देने का वादा करके उसके साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाए। आदी के दोस्तों को जब यह बात पता चली तो उन लोगों ने मिलकर लड़की का गैंगरेप करने का प्लान बना डाला।

16 फरवरी को आदी ने लड़की को अकेले होने की बात बोलकर अपने कमरे में बुलाया। उसके बाद वहां उसके दोस्त पहुंच गए और इसके बाद सभी ने उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर उसके साथ गैंगरेप किया। इस घटना से लड़की इतनी टूट गई की उसने पूरी सच्चाई अपने भाई और मां को बताई। इसके बाद 18 फरवरी की दोपहर जब घर में कोई नहीं था, तब वह पंखे से फंदा बनाकर झूल गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

परिजनों ने किया थाने का घेराव: पोस्टमॉर्टम के बाद लड़की के शव को परिजनों के हवाले कर दिया गया। जिसके बाद परिजनों और समाज वालों ने थाने का घेराव कर ज्ञापन सौंपा है और इस मामले की गंभीरता से जांच करने और आरोपी को फांसी देने की मांग की है।

सुसाइड नोट में लिखा- मुझे धोखा दिखा: नाबालिग ने मरने से पहले जो सुसाइड नोट लिखा है उसमें लिखा है, "मैंने जो किया मानती हूं गलती मेरी है, लेकिन आदी और मेरी मर्जी से हुआ सब, और उसके अलावा आज तक कभी कोई ऐसी चीज मैंने किसी के साथ नहीं की। ये कोई पहली बार नहीं था। उसके घर में आती जाती थी। तब से ये सब है। 2 जून 2024 से सब चला आ रहा है। कभी जबरदस्ती तो कभी मेरी मर्जी से।" सुसाइड नोट में यह भी लिखा है कि वो दोनों शादी करने वाले थे।

कॉल रिकार्डिंग में है गैंगरेप करने की बात: लड़की के मोबाइल फोन से वॉट्सऐप चैट और कुछ कॉल रिकॉर्डिंग मिले हैं। उसमें नाबालिग और आदी के बीच संबंध की बात का पता चल रहा है, बल्कि यह भी लड़की कह रही है कि आदी ने उसे अकेले बुलाकर दोस्तों के साथ गैंगरेप किया है। उसने ये बात अपने भाई और मां को बता दी है।

अकेले बच्ची की खुदकुशी से मां का रो-रोकर बुरा हाल: लड़की के पिता बचपन में ही गुजर गए थे। मां कैंटीन में खाना बनाती है और एक बड़ा भाई भी है। मां ने दूसरा निकाह किया और उसके बाद से लड़की अपने माता-पिता के साथ रहती थी। लड़की पढ़ाई छोड़ने के बाद घर में रहकर सिलाई कढ़ाई का काम कर रही थी। भाई और पिता प्राईवेट कंपनी में काम करते हैं।

राजस्थान स्वीट्स के मालिक ने की आत्महत्या, नहाने की बात कहकर छत पर गया, फंदे से लटकी मिली लाश

मीडिया ऑडीटर, कांकेर (एजेंसी)। कांकेर में राजस्थान स्वीट्स एंड बेकरी के मालिक ने आत्महत्या कर ली है। जोधपुर के लुणावास गांव के रहने वाले पुखराज ने फांसी लगाकर जान दे दी। घटना की जानकारी उनके छोटे भाई हमीरा राम ने दी।

हमीरा राम ने कोतवाली थाने में बताया कि सुबह 9 बजे पुखराज नहाने के लिए छत पर गए थे। लंबे समय तक नीचे नहीं आने पर जब वह ऊपर गए, तो उन्हें फांसी के फंदे पर लटका पाया। लोगों की मदद से उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया। चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

हमीरा राम के अनुसार उनके भाई पिछले 6 महीनों से किसी बात को लेकर परेशान थे। वह अक्सर गुमसुम रहते थे। पूछने पर भी अपनी परेशानी नहीं बताते थे। छोटे भाई ने कई बार उनकी समस्या जानने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ नहीं बताते थे।

थाने के पास एटीएम में तोड़फोड़

सीसीटीवी कैमरे नहीं थे, कैश सुरक्षित, आसपास की दुकानों में भी नुकसान पहुंचाया

मीडिया ऑडीटर, धमतरी (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के रुद्री थाने से महज 100 मीटर की दूरी पर स्थित एक एटीएम में अज्ञात बदमाशों ने तोड़फोड़ की। एटीएम में 100, 200 और 500 रुपए के नोटों के साथ लाखों रुपये रखे हुए थे। हालांकि, राहत की बात यह है कि एटीएम में रखी नकदी सुरक्षित है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। इस घटना ने इलाके में दहशत का माहौल बना दिया है।

इस घटना के समय एटीएम में सीसीटीवी कैमरे नहीं थे, जिससे आरोपियों की पहचान में समस्या आ रही है। बदमाशों ने एटीएम के अलावा आसपास की कई दुकानों में भी तोड़फोड़ की, जिससे भारी नुकसान हुआ है।

सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही पुलिस: घटना के बारे में जानकारी मिली कि रुद्री थाना से लगभग 100 मीटर दूर स्थित एटीएम में अज्ञात व्यक्ति ने तोड़फोड़ की। सुबह होते ही लोग जब उस रास्ते से गुजर रहे थे, तो उन्होंने एटीएम को क्षतिग्रस्त देखा और पुलिस को सूचित किया। पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस आस-पास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी देख रही है।

बदमाशों ने बैटरी यूपीएस को भी नुकसान पहुंचाया: एटीएम के संचालक महेश श्रीवास्तव ने बताया कि सुबह रुद्री के व्यापारियों ने उन्हें तोड़फोड़ की सूचना दी। जब वे मौके पर पहुंचे, तो एटीएम की मशीन पूरी तरह से क्षतिग्रस्त पाई गई। साथ ही, एटीएम के एक्स्ट्रा रूम में लगी बैटरी यूपीएस को भी नुकसान पहुंचाया गया और डिस्प्ले तोड़ दिया गया। हालांकि, उन्होंने यह साफ किया कि एटीएम में रखी नकदी में कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है और वह पूरी तरह सुरक्षित है।

एटीएम में करीब 5 लाख रुपए थे: एटीएम में सीसीटीवी नहीं था, लेकिन एक कैमरा मशीन पर लगा हुआ था, जिससे अज्ञात व्यक्ति की पहचान हो सकती है। कंपनी से मेल करने पर उस फुटेज को हासिल किया जाएगा। बताया गया कि एटीएम में करीब 5 लाख रुपए की नकदी रखी गई थी।

रुद्री थाना के एएसआई घनश्याम वर्मा ने बताया कि रात करीब 1:30 बजे एटीएम तोड़फोड़ की सूचना मिली थी। फिलहाल जांच की जा रही है और पुलिस अज्ञात आरोपियों की तलाश में जुटी है।

10 साल के बच्चे संग अननैचुरल सेक्स

नाना ने बर्थडे की रात किया गंदा काम, पीड़ित ने रोते हुए मां को बताई आपबीती

मीडिया ऑडीटर, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही (एजेंसी)। पेंड्रा जिले के पेंड्रा थाना क्षेत्र में 10 साल के बच्चे के साथ अननैचुरल सेक्स का मामला सामने आया है। रिश्ते में लगने वाले नाना ने बच्चे के साथ उसके बर्थडे के दिन के उसके साथ गंदा काम किया। घरवालों ने बच्चे के जन्मदिन पर आरोपी को बतौर मेहमान बुलाया था। शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी को आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

घटना पेंड्रा थाना क्षेत्र के एक गांव की है। पीड़ित बच्चे का जन्मदिन था। आरोपी करीब 30 वर्ष का है, जो पीड़ित बच्चे का रिश्ते में नाना है। बच्चे के बर्थडे के मौके पर घरवालों ने उसे घर बुलाया था। रात को देर हो जाने के कारण वह वहीं रुक गया।

बर्थडे की रात आरोपी ने बच्चे के साथ किया गंदा काम: पीड़ित बच्चा नाना के साथ एक ही बिस्तर पर सो गए। बच्चे की मां दूसरे कमरे में सो रही थी। इसी दौरान आरोपी ने बच्चे के साथ अननैचुरल सेक्स किया। आधी रात बच्चे ने रोते हुए अपनी मां को पूरी घटना बताई।

परिजनों ने तुरंत पेंड्रा थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार आरोपी अविवाहित है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पोक्सो एक्ट की धारा 4 के तहत मामला दर्ज किया है।

थाना प्रभारी जीपी बंजारे के अनुसार आरोपी को कानून के तहत कड़ी सजा दिलाई जाएगी।

शादीशुदा आरक्षक ने 7 साल तक किया युवती से दुष्कर्म

पहले दोस्ती फिर प्यार का नाटक, शादी का झांसा देकर बनाए शारीरिक संबंध

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। कोरबा में एक पुलिस आरक्षक पर युवती से दुष्कर्म का गंभीर आरोप लगा है। पीड़िता ने पुलिस अधीक्षक से शिकायत की हैं। युवती ने बताया कि 2017 में पेट्रोलिंग के दौरान आरक्षक सुरेश मणि से मुलाकात हुई थी।

नंबर का आदान-प्रदान हुआ और बातचीत शुरू हो गई। आरक्षक ने खुद को अविवाहित बताया। दोस्ती प्यार में बदली और शादी का वादा किया। इसी बहाने आरोपी ने युवती के साथ शारीरिक संबंध बनाए। बाद में पता चला कि वह पहले से शादीशुदा है।

वर्तमान में मोरगा पुलिस चौकी में तैनात आरोपी आरक्षक पिछले 7 साल से युवती का शारीरिक शोषण करता रहा। विरोध करने पर मारपीट भी की। दो दिन पहले मोरगा बस स्टैंड पर आरोपी और उसकी पत्नी ने युवती की पिटाई की। इससे उसे कई जगह गंभीर चोटें आईं।

पीड़िता कई थानों में शिकायत कर चुकी है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। अब पुलिस अधीक्षक से न्याय की गुहार लगाई है। कोरबा में पहले भी ऐसे मामले सामने आ चुके हैं, जिनमें आरोपियों को जेल भेजा गया है। महिला संबंधी अपराधों में त्वरित कार्रवाई के निर्देश हैं। अब देखना है कि इस मामले में कब कार्रवाई होती है।

मतगणना के दौरान बैलेट बॉक्स लूटने की कोशिश, चुनाव कर्मियों से किया गया मारपीट, पुलिस ने आरोपियों पर किया मामला दर्ज

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के विकासखंड खड़गवां थाना अंतर्गत ग्राम कटकोना में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के दौरान मतदान केंद्र में भारी हंगामे की घटना सामने आई है। मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी योगेश्वर सिंह पिता लालचन्द सिंह (32 वर्ष), निवासी ग्राम तामडांड, थाना बैकुण्ठपुर, जिला कोरिया (छत्तीसगढ़) ने आरोपी राम सिंह, राम अधार, दिनेश वियार, आरत, शिवकुमार, भजन, और जगत सहित लगभग 100 लोगों के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार 16 फरवरी 2025 को त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए मतदान केंद्र क्रमांक 26, अतिरिक्त भवन कटकोना में सैनिक भाल चन्द, पीठासीन अधिकारी मुकदेव राम भगत एवं मतदान दल के कर्मचारी चुनाव संपन्न कराने के लिए शांति व्यवस्था ड्यूटी पर तैनात थे। 17 फरवरी 2025 की शाम करीब 7:30 बजे जब मतदान दल मतगणना करा रहे थे, तभी अचानक बिजली की आपूर्ति बाधित हो गई। इसी दौरान आरोपियों ने मतदान कक्ष के पास पहुंचकर मां-बहन की अश्लील गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी देनी शुरू कर दी। इसके बाद चार आरोपी मतदान केंद्र के अंदर घुस गए और बैलेट बॉक्स लूटने का प्रयास करने लगे। जब सुरक्षा कर्मियों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, तो आरोपियों ने वनरक्षक योगेश्वर सिंह और सैनिक भाल चन्द के साथ मारपीट शुरू कर दी। मतदान केंद्र का दरवाजा तोड़ने के बाद आरोपियों ने बैलेट बॉक्स ले जाने का प्रयास किया।

छत्तीसगढ़ी भाषा के पुरोधा पद्मश्री श्यामलाल चतुर्वेदी की 99वीं जयंती, साहित्यकारों ने दी श्रद्धांजलि, जन्मशती वर्ष के आयोजन की तैयारी शुरू

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष पद्मश्री श्यामलाल चतुर्वेदी की 99वीं जयंती मनाई गई। उनकी प्रतिमा स्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। कार्यक्रम में नवनिर्वाचित महापौर, राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष और साहित्यकार शामिल हुए।

थावे विद्यापीठ, बिहार के कुलपति एवं छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय पाठक ने कहा कि पंडित चतुर्वेदी ने छत्तीसगढ़ी को जन-जन तक पहुंचाया। उन्होंने बताया कि 1987 में उनकी षष्ठीपूर्ति पर प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ में देश के प्रतिष्ठित साहित्यकार शामिल हुए थे।

छत्तीसगढ़ के लिए गौरव: नवनिर्वाचित महापौर पूजा विधानी ने कहा कि पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी का छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य के विकास में अतुलनीय योगदान रहा है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्हें मिला पद्मश्री सम्मान पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गौरव की बात है।

काव्यांजलि की प्रस्तुति: साहित्यकार डॉ. एके यदु ने कहा कि पंडित चतुर्वेदी ने अपने लेखन से समाज में अच्छाई और सच्चाई की भावना फैलाई। उनकी 'बेटी के बिदा' कविता उनकी संवेदनशीलता को दर्शाती है। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ी कवि सनत तिवारी ने काव्यांजलि प्रस्तुत की।

जन्म शताब्दी वर्ष के लिए बनेगी टीम: जन्म शताब्दी वर्ष के लिए एक विशेष टीम बनाने का निर्णय लिया गया। इस आयोजन को छत्तीसगढ़ के साहित्यिक और अकादमिक स्तर पर मनाया जाएगा। कार्यक्रम में पार्षद, पूर्व पार्षद, साहित्यकार और बुद्धिजीवी समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री 21 फरवरी को करेंगे जैविक खेती पर कार्यशाला का शुभारंभ

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 21 फरवरी को प्रातः 10ः30 बजे राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र बरखेड़ी कलां, भोपाल में जैविक खेती पर दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ करेंगे। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना भी उपस्थित रहेंगे।

वर्तमान खेती में रासायनिक उर्वरकों, खरपतवार नाशकों एवं कीटनाशकों के बढ़ते उपयोग के कारण भूमि एवं वातावरण में हानिकारक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है, जिसके कारण पर्यावरण, मृदा उर्वरता तथा मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पर्यावरण और उपभोक्ता के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये कृषि में रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग को हतोत्साहित करने के लिये जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। इस उद्देश्य से कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यशाला में जैविक कपास, फल एवं सब्जियां एवं अन्य फसलों के लिए जैविक खेती पद्धति एवं उत्पादों की मूल्य श्रृंखला विकसित करने पर विस्तृत चर्चा की जायेगी। साथ ही प्रदेश के विकास के लिए रणनीति तैयार की जायेगी। कार्यशाला में केन्द्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक, संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, एफ.पी.ओ. एवं जैविक खेती के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

प्रदेश में 11 एग्रो क्लाईमेटिक जोन में विभिन्न फसलों की व्यापक क्षेत्र में खेती की जा रही है। पर्यावरण संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य, स्वस्थ खाद्य उत्पाद एवं बाजार मांग के दृष्टिकोण से व्यापक क्षेत्र में प्राकृतिक एवं जैविक खेती की संभावनाएं हैं। प्राकृतिक एवं जैविक खेती के विभिन्न हितधारकों के साथ विचार-विमर्श कर व्यवहारिक कार्ययोजना, नीति तैयार करने, कॉमन संस्थात्मक प्लेटफार्म विकसित करने और प्रदेश में प्राकृतिक एवं जैविक परिदृश्य के विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिये उपयोगी होगी।

असम खदान रेस्क्यू- 44 दिन बाद बाकी 5 शव बरामद

दीमा हसाओ (एजेंसी)। असम अवैध खदान हादसे में मारे गए 5 और मजदूरों के शव बरामद कर लिए गए हैं। रेस्क्यू टीम को सर्च ऑपरेशन में 44 दिन लग गए। पुलिस ने भास्कर को बताया कि शव बुरी तरह सड़-गल चुके हैं। मजदूरों की पहचान के लिए, डीएनए टेस्ट किया जाएगा। इससे पहले 8 जनवरी को एक शव और 11 जनवरी को तीन शव बरामद हुए थे। दरअसल, दीमा हसाओ जिले की उमरंगसो कोयला खदान में पानी भरने से 9 मजदूर फंस गए थे। सरकार सभी पीड़ितों के परिवारों को 10-10 लाख रुपए के मुआवजा देगी। साथ ही अवैध रूप से चल रही 220 ऐसी ही खदानों को बंद किया जाएगा। कोयला खदान हादसे में मारे गए लिजान मगर की पत्नी जुनु प्रधान कहती हैं कि 6 जनवरी को उनके काम का पहला दिन था। लिजान हमारे परिवार का इकलौता कमाने वाला था। पत्नी जुनू ने कहा- मेरा 2 महीने का बच्चा है और मुझे नहीं पता कि हमारा भविष्य क्या होगा।

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम शिंदे की कार को बम से उड़ाने की धमकी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे की कार को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। मुंबई पुलिस को गुरुवार सुबह एक अज्ञात कॉल आया था। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि गोरेगांव, जेजे मार्ग पुलिस स्टेशनों और राज्य सरकार के मुख्यालय मंत्रालय के कंट्रोल रूम में कॉल आए। कॉल करने वाले ने शिंदे की कार को बम से उड़ाने की धमकी दी।

हिमाचल के ऊंचे पहाड़ों अच्छी बर्फबारी

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सुबह से बर्फबारी हो रही है। शिमला और मनाली में भी सुबह के वक्त कुछ देर के लिए हल्की बर्फबारी हुई। मगर जमीन पर टिक नहीं पाई। अटल टनल रोहतांग में सुबह से रुक रुक कर बर्फबारी जारी है। इससे अटल टनल के लिए वाहनों की आवाजाही रोक दी गई है। शिमला के नारकंडा और कुफरी में भी सुबह के वक्त बर्फबारी हुई। इससे सड़क पर फिसलन बढ़ गई है। खासकर नारकंडा में नेशनल हाईवे को दोपहर तक वाहनों के लिए बंद करना पड़ा। कुफरी और फागू के बीच भी सुबह से ही फिसलन के कारण ट्रैफिक जाम लगा रहा। सड़क पर फिसलन को देखते हुए शिमला पुलिस ने लोगों को सावधानी से गाड़ी चलाने की सलाह दी है। पहाड़ों पर बर्फ देखकर टूरिस्ट हिमाचल के पर्यटन स्थलों का रुख करने लगे हैं। शिमला के मशहूर पर्यटन स्थल कुफरी, नारकंडा, मनाली, सोलंग नाला, डलहौजी और सिस्सू में अच्छी बर्फबारी हुई है।

दिल्ली सीएम रेखा ने मंत्रियों के साथ यमुना आरती की

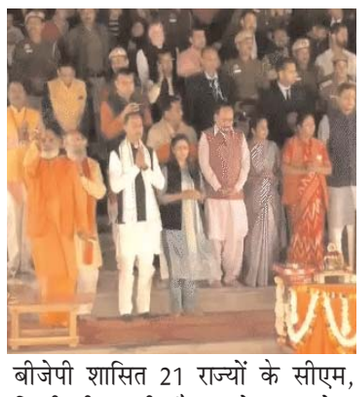

नई दिल्ली। दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता ने गुरुवार शाम को शपथ लेने के 6 घंटे बाद यमुना घाट पर आरती की। उनके साथ 6 मंत्री भी थे। थोड़ी देर में पहली कैबिनेट मीटिंग होगी। दिल्ली विधानसभा चुनाव में यमुना की सफाई बड़ा मुद्दा था। भाजपा ने भी अपने मेनिफेस्टो में यमुना की सफाई का वादा किया था। यह कार्यक्रम इसी से जोड़कर देखा जा रहा है। इससे पहले रेखा ने आज दोपहर 12ः30 बजे दिल्ली के रामलीला मैदान में शपथ ली। रेखा शालीमार बाग सीट से पहली बार की विधायक हैं। वे दिल्ली की 9वीं और चौथी महिला सीएम बन गई हैं। रेखा से पहले सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित और आतिशी मुख्यमंत्री रहीं। इस समारोह में पीएम मोदी, अमित शाह के अलावा

बीजेपी शासित 21 राज्यों के सीएम, डिप्टी सीएम भी मौजूद रहे। आप नेता अरविंद केजरीवाल और आतिशी शपथ में नहीं पहुंचे। प्रवेश वर्मा समेत 6 मंत्रियों ने भी शपथ ली रेखा के अलावा 6 मंत्रियों ने भी शपथ ली। इनमें अरविंद केजरीवाल को हराने वाले प्रवेश वर्मा, आशीष सूद, मनजिंदर सिंह सिरसा, रविंद्र इंद्राज सिंह, कपिल मिश्रा और पंकज कुमार सिंह शामिल है। रेखा बोलीं- मैं शीशमहल में नहीं रहूंगी शपथ से पहले रेखा गुप्ता ने गुरुवार सुबह मीडिया से बातचीत में कहा, यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मुझ पर भरोसा जताने के लिए मैं पीएम मोदी और पार्टी हाईकमान का शुक्रिया अदा करती हूं। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं दिल्ली की सीएम बनूंगी। मैं शीशमहल में नहीं रहूंगी। दिल्ली के मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास को भाजपा ने शीशमहल नाम दिया था। अरविंद केजरीवाल ने इसे बनवाया था। भाजपा का आरोप है कि केजरीवाल ने इसे बनवाने में नियमों को ताक पर रखकर करोड़ों रुपए खर्च किए थे। भाजपा ने इसे चुनावी मुद्दा भी बनाया था।

कर्नाटक में कश्मीरी एमबीबीएस छात्र से रैगिंग और मारपीट

बेंगलुरु। कर्नाटक के बीजापुर में अल-अमीन मेडिकल कॉलेज में कश्मीर के रहने वाले एमबीबीएस सेकेंड ईयर के स्टूडेंट के साथ रैगिंग और मारपीट का मामला सामने आया है। मामले में जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कर्नाटक के सीएम सिद्धरमैया को चिट्ठी लिखकर कार्रवाई की मांग की है। घटना की जानकारी देते हुए जम्मू-कश्मीर छात्र संघ (छ्यफ़) ने बताया कि पीड़ित स्टूडेंट हामिम कश्मीर के अनंतनाग का रहने वाला है। छ्यफ़ के मुताबिक 18 फरवरी शाम 4 बजे कॉलेज के 2019 और 2022 बैच के स्टूडेंट्स के बीच क्रिकेट मैच हो रहा था। हामिम मैच देखने गया था, उसी दौरान उससे बदसलूकी और मारपीट की गई। पिछले साल भी एक सीनियर स्टूडेंट ने हामिम के साथ बदसलूकी की थी। तब हामिम डिनर करने गया था और उसने सीनियर का अभिवादन नहीं किया था। हालांकि कॉलेज प्रशासन ने रैगिंग और मारपीट की घटना से इनकार किया है। कॉलेज प्रशासन ने कहा कि मामले को बेवजह बढ़ा-चढ़ाकर बताया जा रहा है। जबरन गाड़ी में बैठाकर मारपीट की गई जम्मू-कश्मीर छात्र संघ के राष्ट्रीय संयोजक नासिर खुहामी ने बताया कि हामिद के साथ सीनियर्स ने क्रिकेट मैच के दौरान रैगिंग की।

राहुल से पूछा- महाकुंभ जाएंगे, बोले- नमस्कार,रायबरेली में कहा- मायावती साथ देतीं, तो भाजपा जीत नहीं पाती

रायबरेली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी दो दिन के दौरे पर गुरुवार को रायबरेली पहुंचे। सबसे पहले बछरावां में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। कहा- बीजेपी ने जीएसटी और नोटबंदी कर देश में बेरोजगारी बढ़ाई है। केंद्र सरकार ईमानदारी से काम करे, तो करोड़ों युवाओं को रोजगार मिल सकता है। महाकुंभ जाने के सवाल पर

राहुल गांधी ने कहा- नमस्कार और आगे बढ़ गए। इससे पहले राहुल गांधी सुबह 10 बजे लखनऊ एयरपोर्ट पहुंचे। वहां से सड़क के रास्ते रायबरेली पहुंचे। यहां हनुमान मंदिर में पूजा-अर्चना की। इसके बाद राहुल गांधी मूल भारती छात्रावास पहुंचे, यहां छात्रों से सवाल-जवाब किए। छात्रों से कहा- देश में हर रोज कानून तोड़ा जा रहा है। इसलिए आपकी बात सुनने और समझने आया हूं। एक सवाल के जवाब में राहुल गांधी ने कहा- मेरा सवाल है, बहनजी (मायावती) आज तक कोई चुनाव ठीक से क्यों नहीं लड़ीं?

संगम पहुंचने के लिए 10 किमी पैदल चलना पड़ रहा

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ का आज 39वां दिन है। सुबह से ही संगम आने वाले सभी रास्तों पर 8 से 10 किमी तक श्रद्धालुओं की भीड़ है। शहर के बाहर की पार्किंग में ही वाहनों को रोका जा रहा है। वहां से शटल बस और ई-रिक्शा से श्रद्धालु महाकुंभ पहुंच रहे हैं।

शाम 6 बजे तक 1 करोड़ 15 लाख श्रद्धालु डुबकी लगा चुके हैं। 13 जनवरी से अब तक 56.75 करोड़ श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। संगम तट पर भीड़ न हो, इसलिए पुलिस श्रद्धालुओं से स्नान करके वहां से हटने की अपील कर रही है। मेला खत्म होने में 6 दिन और बचे हैं। प्रशासन का अनुमान है कि कल यानी शुक्रवार से महाकुंभ में भीड़ बढ़ेगी। क्योंकि, यह महाकुंभ का आखिरी वीकेंड है। 26 फरवरी को महाशिवरात्रि स्नान के साथ मेला खत्म हो जाएगा भीड़ के चलते प्रयागराज में स्कूलों में आठवीं तक की कक्षाएं ऑनलाइन लगेंगी। इस संबंध में 20 फरवरी को आदेश जारी किया गया है। प्रयागराज आने-जाने वाली 8 ट्रेनें 28 फरवरी तक रद्द कर दी गई हैं। 4 ट्रेनों के रूट बदले गए हैं। आज परमार्थ निकेतन शिविर में कारोबारी अशोक पी हिन्दुजा, उनकी पत्नी हर्षा, पुत्र शोम और परिवार के सदस्य पहुंचे। हिन्दुजा परिवार ने स्वामी चिदानन्द सरस्वती और साध्वी भगवती सरस्वती से भेंट की। शिविर के भंडारे में हिन्दुजा परिवार ने स्वच्छता कर्मियों, श्रद्धालुओं को भोजन प्रसाद परोसा।

हाईकोर्ट जजों के खिलाफ लोकपाल जांच, सुप्रीम कोर्ट की रोक

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को लोकपाल के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें कहा गया था कि हाईकोर्ट के जजों के खिलाफ शिकायतों की जांच करना लोकपाल के अधिकार क्षेत्र में आता है। जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस अभय एस ओका की बेंच ने गुरुवार को मामले पर खुद सुनवाई की और कहा कि यह बहुत परेशान करने वाली बात है। कोर्ट ने केंद्र सरकार, लोकपाल रजिस्ट्रार, शिकायतकर्ता को नोटिस जारी करते हुए निर्देश दिया कि 18 मार्च को अगली सुनवाई होगी। तब तक जजों के नाम और शिकायत का खुलासा नहीं करना है।

आरोप- कंपनी के पक्ष में फैसले के लिए जजों से सिफारिश की दरअसल, लोकपाल ने 27 फरवरी को एक आदेश जारी कर हाईकोर्ट के एक मौजूदा एडिशनल जज के खिलाफ दो शिकायतों पर कार्रवाई की बात कही थी। लोकपाल ने कहा कि हाई कोर्ट का जज लोकपाल अधिनियम की धारा 14 (1) के दायरे में एक व्यक्ति के रूप में योग्य होगा। इन शिकायतों में आरोप था कि संबंधित जज ने एक निजी कंपनी के पक्ष में फैसला लेने के लिए हाईकोर्ट के एक अन्य जज और एक एडिशनल जिला जज को सिफारिश की।

यूपी बजट- 9 लाख आउटसोर्स कर्मियों की सैलरी बढ़ाई

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी की योगी सरकार ने गुरुवार को 2025-26 का बजट पेश किया। बजट में सरकार ने आउटसोर्सिंग कर्मचारियों का मानदेय बढ़ाने का ऐलान किया है। इससे 9 लाख कर्मचारियों को फायदा होगा। अब उन्हें 16 हजार की जगह न्यूनतम मानदेय 20 हजार रुपए दिया जाएगा। 12वीं में अच्छे नंबर लाने वाली प्रतिभाशाली छात्राओं को फ्री में स्कूटी मिलेगी। इसमें यूपी बोर्ड के अलावा सीबीएसई की छात्राओं को भी शामिल किया जाएगा। हर जिले में लेबर अड्डे बनाएंगे, जहां कैंटीन, टॉयलेट की सुविधा रहेगी। जीरो पॉवर्टी की भी घोषणा की गई है।

राहुल गांधी की नागरिकता मामले की सुनवाई 26 मार्च को

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की नागरिकता को लेकर दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 26 मार्च को तय की है। बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने 2019 में केंद्रीय गृह मंत्रालय में एक शिकायत दर्ज कर आरोप लगाया था कि राहुल गांधी द्वारा ब्रिटिश अधिकारियों को सौंपे गए डॉक्यूमेंट में खुद को ब्रिटिश नागरिक घोषित किया है। स्वामी ने तर्क दिया कि यह भारतीय संविधान और नागरिकता अधिनियम का उल्लंघन है और यह ब्रिटिश पासपोर्ट रखने के बराबर है। कोर्ट ने

एडिशनल सॉलिसिटर जनरल चेतन शर्मा से कहा कि याचिकाकर्ता (स्वामी) मूल मुद्दे पर कोई फैसला नहीं चाहते, बल्कि केवल यह जानना चाहते हैं कि उनके द्वारा भेजी गई एप्लीकेशन पर कोई कार्रवाई होगी या नहीं। स्वामी बोले- एप्लीकेशन को पीआईएल माना जाए या नहीं स्वामी ने अपनी याचिका में गृह मंत्रालय से यह स्पष्ट करने की मांग की है कि उनकी एप्लीकेशन को जनहित याचिका माना जाए या नहीं। दरअसल, अप्रैल 2019 में गृह मंत्रालय ने राहुल गांधी को एक पत्र भेजकर उनकी नागरिकता को लेकर स्पष्टीकरण मांगा था। इलाहाबाद हाई कोर्ट में भी याचिका कर्नाटक के बीजेपी कार्यकर्ता एस विग्नेश शिशिर ने बुधवार को सुनवाई के दौरान तर्क दिया कि स्वामी की याचिका अब बेकार हो गई है। केंद्र सरकार ने पहले ही इलाहाबाद हाईकोर्ट को सूचित किया है कि इस मामले पर निर्णय लेने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है।

नीरज चोपड़ा ने पहली बार सीक्रेट शादी पर बात की

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में पानीपत के रहने वाले गोल्डन बॉय नीरज चोपड़ा ने पहली बार हिमानी मोर से सीक्रेट शादी पर बात की है। नीरज ने बताया, %मुझे ट्रेनिंग करनी थी, इस वजह से जल्दी में शादी की।% इस दौरान नीरज चोपड़ा ने हिमानी से मिलने की स्टोरी भी बताई कि किस तरह स्पोर्ट्स बैकग्राउंड होने की वजह से उनकी मुलाकात शादी तक पहुंच गई। नीरज ने सोनीपत की टेनिस प्लेयर हिमानी मोर से 16 जनवरी को शादी की। यह शादी हिमाचल प्रदेश के सोलन में एक रिजॉर्ट में हुई। सबको इसका पता तब चला, जब नीरज ने पत्नी समेत अमेरिका जाने के बाद सोशल मीडिया पर इसकी 3 तस्वीरें शेयर कीं। दरअसल, नीरज चोपड़ा ने अपनी शादी को लेकर एक निजी चैनल से बात की। इसमें उन्होंने शादी को लेकर नीरज चोपड़ा ने कहा- हम पहले से उन्हें जानते थे। इसकी सबसे बड़ी वजह उनका स्पोर्ट्स फैमिली से संबंधित होना है।

केंद्रीय मंत्री रवनीत बिट्टू फिर पहुंचे सीएम आवास,नहीं दिया समय, बोले- मुझसे बात करने की हिम्मत दिखाएं भगवंत मान

चंडीगढ़ (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू गुरुवार को एक बार फिर पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान से मिलने उनके चंडीगढ़ स्थित आवास पर पहुंचे, लेकिन उन्हें बिना मुलाकात किए ही लौटना पड़ा। इसके बाद रवनीत बिट्टू ने ट्वीट कर कहा कि पिछले 10 दिनों में तीन बार मुख्यमंत्री भगवंत मान से मिलने का समय लेने की कोशिश की, लेकिन हर बार अनसुना कर दिया गया। मीडिया के जरिए भी कई बार मुख्यमंत्री से समय मांगा, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं जुटाई कि मुझसे बात कर सकें। उन्होंने कहा कि 19 फरवरी को मैं अकेला मुख्यमंत्री निवास पहुंचा और भगवंत मान को सीधा संदेश दिया कि अगर उन्होंने मेरे कार्यकर्ताओं के साथ जबरदस्ती करने की हिम्मत की है, तो अब मुझसे भी बात करने की हिम्मत दिखाएं। लेकिन मुख्यमंत्री, जो खुद को पंजाब और पंजाबियों का नेता बताते हैं, इस कदर भयभीत हैं कि अपने आवास के अंदर ही छिपे रहे और मुझसे बातचीत करने से बचते रहे। केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू बुधवार को पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान से बहस करने के लिए उनके आवास पहुंचे। लेकिन सुरक्षा कर्मियों ने उन्हें अंदर जाने नहीं दिया और गेट पर ही रोक दिया। इस दौरान बिट्टू की सुरक्षा टीम और चंडीगढ़ पुलिस अधिकारियों के बीच बहस और धक्का-मुक्की तक हो गई। चंडीगढ़ पुलिस के अधिकारियों का कहना था कि बिट्टू के पास परमिशन नहीं थी, इसलिए उनके काफिले को रोका गया।

डल्लेवाल ने किसान संगठनों को दिया एकता का संदेश

चंडीगढ़ (एजेंसी)। केंद्र सरकार और आंदोलनकारी किसानों के बीच छठे दौर की बैठक 22 फरवरी को शाम छह बजे चंडीगढ़ में होगी। बैठक को लेकर केंद्र सरकार की ओर से आधिकारिक पत्र जारी कर दिया गया है। उधर, खनौरी बॉर्डर पर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का अनशन 87वें दिन में प्रवेश कर गया है। वहीं बैठक से पहले डल्लेवाल ने संदेश जारी कर सभी संगठनों को एकजुट होने का न्योता दिया है। उन्होंने कहा कि यह लड़ाई अब बहुत आगे बढ़ चुकी है। इसे जीतने के लिए एकता की जरूरत है। साथ ही उन्होंने अपने सभी संगठनों को एकता के लिए पत्र भी लिखा है। 27 फरवरी को चंडीगढ़ में बैठक होगी। डल्लेवाल ने करीब सात मिनट का संदेश जारी किया है। हालांकि, वह 14 तारीख से मेडिकल हेल्प नहीं ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह इस बैठक में शामिल होंगे।

डल्लेवाल ने कहा कि यह आंदोलन करीब एक साल से चल रहा है। 21 फरवरी 2024 को किसान शुभकरण की गोली लगने से मौत हुई थी। कल तीनों मोर्चों

पर देश के अलग-अलग राज्यों में उन्हें श्रद्धांजलि दी जाएगी। श्रद्धांजलि सभाएं की जाएंगी। गांव बल्लों बठिंडा में मजबूत श्रद्धांजलि सभा की जाएगी। वहां गांव के लोगों द्वारा शुभकरण की प्रतिमा स्थापित की गई है। उसका पर्दा भी कल हटाया जाएगा।

हमारे प्रधानमंत्री यह कहते हैं कि देश में दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र राज है। तो कल हमें इस नौजवान की श्रद्धांजलि समारोह अलग-अलग जगह करनी पड़ रही है। इसकी हमें जरूरत क्यों पड़ी। लोकतंत्र राज के अंदर तो यह नहीं होता है। जो लोग अपनी बात करना चाहते हैं, क्या उन पर गोलियां चलाई जाती है।

शुभमन गिल ने बाबर आजम की बादशाहत की खत्म

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल ने आईसीसी द्वारा जारी ताजा बल्लेबाजों की रैंकिंग में टॉप स्थान हासिल किया है। बुधवार को शुभमन गिल आईसीसी वनडे रैंकिंग में नंबर वन बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम को पीछे छोड़कर ये उपलब्धि हासिल की। गिल ने हाल ही में इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के दौरान बेहतरीन प्रदर्शन किया था और शतक भी लगाया था। चैंपियंस ट्रॉफी के शुरुआती दिन ही गिल के नंबर वन बल्लेबाज बनने से भारत को फायदा होगा। टूर्नामेंट में गिल से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद होगी। गिल वनडे में शानदार फॉर्म से गुजर रहे हैं। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज में 86.33 के औसत से 259 रन बनाए। टीम इंडिया के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने गिल की तारीफ करते हुए कहा था कि हाल ही में उप-कप्तान बनाए जाने से उन्हें लगातार अच्छा प्रदर्शन करने में मदद मिली है। पिछले हफ्ते गिल को बाबर आजम को रैंकिंग में पीछे छोड़ने के लिए पांच अंक की जरूरत थी। 19 फरवरी को बाबर आजम को 13 पॉइंट का नुकसान हुआ, जबकि शुभमन गिल को 15 पॉइंट मिले।

पाकिस्तान के खिलाफ कोहली-रोहित होंगे अहम, सौरव गांगुली ने दिया ये बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2024 का आगाज हो चुका है। वहीं भारतीय टीम अपना पहला मुकाबला बांग्लादेश के खिलाफ 20 फरवरी को दुबई में खेलेगी। वहीं भारतीय टीम अपना दूसरा मुकाबला पाकिस्तान के खिलाफ खेलेगी। रविवार को भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला खेला जाएगा। वहीं इस मुकाबले से पहले पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने बड़ा बयान दिया है।

सौरव गांगुली का मानना है कि पाकिस्तान के खिलाफ विराट कोहली भारतीय टीम के सबसे मजबूत स्तंभ होंगे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ विराट कोहली और रोहित शर्मा का किरदार अहम होने वाला है। सौरव गांगुली ने कहा कि विराट कोहली अच्छी क्रिकेट खेल रहे हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है। पाकिस्तान के खिलाफ विराट कोहली और रोहित शर्मा भारत के लिए अहम साबित होंगे। इसके अलावा भारतीय कप्तान रोहित शर्मा का फॉर्म अहम है। मुझे पूरा भरोसा है कि पूरी टीम इंडिया अच्छा प्रदर्शन करेगी। साथ ही सौरव गांगुली ने पाकिस्तान के तेज गेंदबाजों पर अपनी बात रखी। सौरव गांगुली कहते हैं कि भारतीय बल्लेबाजों को शाहीन अफरीदी और नसीम शाह के खिलाफ अलग से तैयारी करने की कोई जरूरत नहीं है। टीम इंडिया के बल्लेबाजों ने वर्ल्ड लेवल पर अच्छे- अच्छे तेज गेंदबाजों को खेला है। बता दें कि, भारतीय टीम चैंपियंस ट्रॉफी के लिए दुबई पहुंच चुकी है। आज से टूर्नामेंट का आगाज हो रहा है।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के पहले मैच में बांग्लादेश से भिड़ेगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत के अभियान की शुरुआत 20 फरवरी, गुरुवार से बांग्लादेश के खिलाफ होगी। ये मुकाबला दोनों टीमों के बीच दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में दोपहर 2.30 बजे से खेला जाएगा। वहीं दोनों टीमों के हालिया रिकॉर्ड्स एक दूसरे से एक दम अलग रहे हैं। टीम इंडिया जहां चैंपियंस ट्रॉफी से पहले इंग्लैंड को 3 मैचों की सीरीज में 3-0 से मात दी थी तो बांग्लादेश को चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की डिसक्वालीफाई टीम वेस्टइंडीज ने 3-0 से हरा दिया। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दूसरे मुकाबले में जहां टीम इंडिया जीत के साथ आगाज कनरे के इरादे से मैदान पर उतरेगी तो बांग्लादेश अपना प्रदर्शन सुधारना चाहेगी।

भारतीय टीम चैंपियंस ट्रॉपी 2025 के अपने पहले मुकाबले में बांग्लादेश के खिलाफ मैदान पर उतरेगी लेकिन उन्हें हल्के में लेने की गलती नहीं करेगी। आईसीसी इवेंट में ये टीम कई बार भारत को परेशान कर चुकी है और 2007 आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप को कौन भूल सकता है। जहां इसी बांग्लादेश ने भारत को हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया था। 2016 टी20 वर्ल्ड कप हो या 2022 का वर्ल्ड कप, बांग्लादेश हमेशा भारतीय टीम का टक्कर देती आई है।

दूसरी ओर टीम इंडिया का यूएई में आईसीसी इवेंट का रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है।

बांग्लादेश के खिलाफ ऐसी हो सकती है टीम इंडिया की प्लेइंग इलेवन, गौतम गंभीर के खास को नहीं मिलेगी जगह?

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारतीय टीम का अभियान 20 फरवरी से बांग्लादेश के खिलाफ होगा। ये मुकाबला दुबई क्रिकेट स्टेडियम में दोपहर 2.30 बजे खेला जाएगा। 2013 के अंतिम बार एमएस धनी कीकप्तानी में चैंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली भारतीय टीम इस बार रोहित शर्मा की कप्तानी में 12 साल बाद ये ट्रॉफी फिर से जीतना चाहेगी। हाल ही में इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज में कोच गौतम गंभीर व कप्तान रोहित की रणनीति तीन स्पिनरों के साथ उतरने की थी और बांग्लादेश के खिलाफ पहले मुकाबले में भी टीम इसी रणनीति पर कायम रहेगी।

सूत्रों के अनुसार, पहले मुकाबले में रविंद्र जडेजा और अक्षर पटेल के साथ तीसरे स्पिनर के रूप में कुलदीप यादव को अंतिम एकादश में जगह मिलनी तय है। अंतिम समय में यशस्वी जायसवाल की जगह चैंपियंस ट्रॉफी की टीम में शामिल किए हुए वरुण चक्रवर्ती और वॉशिंगटन सुंदर को पहले मैच में आराम दिया जा सकता है।

चोट से उबरकर वापसी कर रहे कुलदीप ने इंग्लैंड के खिलाफ दो वनडे मैच खेले थे और उन्होंने दो विकेट भी अपने नामकिए थे। टीम का बल्लेबाजी क्रम में ज्यादा बदलाव होने की संभावना नहीं है। रोहित के साथ उपकप्तान शुभमन गिल ओपनिंग करेंगे। उसके बाद श्रेयस अय्यर, विराट कोहली और केएल राहुल उतरेंगे।

विकेटकीपर के रूप में केएल कोच गंभीर की पहली पसंद है और ये बात गंभीर इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के बाद स्पष्ट कर चुके हैं। अगर तेज गेंदबाजी की बात करें तो शमी के साथ दूसरे तेज गेंदबाज के रूप में अर्शदीप सिंह का खेलना तय है। मलतब ये है कि, ऋषभ पंत को एक बार इंतजार करना होगा।

भारत की संभावित प्लेइंग 11

रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, श्रेयस अय्यर, विराट कोहली, केएल राहुल, हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मोहम्मद शमी और अर्शदीप सिंह।

विल यंग ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में ठोका पहला शतक

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का पहला मुकाबला मेजबान देश पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच खेला जा रहा है। इस मुकाबले में न्यूजीलैंड के सलामी बल्लेबाज विल यंग ने चैंपियंस ट्रॉफी का पहला शतक ठोका है। यंग ने बुधवार को पाकिस्तान के गेंदबाजों को दिन में तारे दिखा दिए। उन्होंने कराची के नेशनल स्टेडियम में मजबूती से एक छोर संभाला और 104 रनों की पारी खेली। उन्होंने 113 गेंदों का सामना करने के बाद 12 चौके और एक छक्का जड़ा। ये उनके वनडे करियर का चौथा शतक है। यंग ने पहली बार किसी आईसीसी प्रतियोगिता में सेंचुरी जड़ने का कमाल किया।

32 वर्षीय यंग ने दिग्गज बल्लेबाज केन विलियमसन के स्पेशल क्लब में एंट्री मारी है। वह चैंपियंस ट्रॉफी में शतक जड़ने वाले न्यूजीलैंड के चौथे प्लेयर बन गए हैं। विलियमसन ने 2017 में आयोजित चैंपियंस ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 100 रन की पारी खेली थी। पूर्व कीवी प्लेयर क्रिस केर्न्स ने साल 2000 में टूर्नामेंट में भारत के खिलाफ नाबाद 102 रन जुटाए। न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर नाथन एस्टल ने 2004 में अमेरिका के सामने नाबाद 145 रन की पारी खेली थी।

दुबई में भारत और बांग्लादेश की टक्कर

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का दूसरा मुकाबला भारत और बांग्लादेश के बीच खेला जाएगा। दोनों टीमों के बीच ये मुकाबला दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। भारतीय टीम का नेतृत्व रोहित शर्मा करेंगे जबकि बांग्लादेश टीम की कमान नजमुल हुसैन शांतो के हाथों में होगी। दोनों टीमों हाल ही में अलग-अलग वनडे मैचों की सीरीज खेलकर टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही है।

टीम इंडिया जहां तीन वनडे मैचों की सीरीज में 3-0 से इंग्लैंड का सूपड़ा साफ कर बढ़े हुए मनोबल के साथ मैदान पर उतरेगी, वहीं वेस्टइंडीज से आखिरी वनडे सीरीज में क्लीन स्वीप झेलनी वाली बांग्लादेश की टीम चैंपियंस ट्रॉफी में अपने प्रदर्शन में सुधार करना चाहेगी। वहीं दुबई में भारत और बांग्लादेश के बीच होने वाले मुकाबले के आंकड़ों के अलावा क्रिकेट फैंस की निगाहें सबसे ज्यादा निगाहें मौसम पर टिकी होंगी। एक्यूवेदर के पूर्वानुमान के आधार पर दुबई के मौसम की बात करें तो सुबह आसमान में बादल छाए रहेंगे, हल्की बारिश के भी आसार हैं। लेकिन दोपहर होते-होते आसमान साफ होगा और धूप खिली होगी। शहर का ज्यादातर तापमान 27 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है जबकि न्यूनतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं। चूंकि यहां कि पिच बल्लेबाजों और गेंदबाजों के लिए समान रूप से संतुलित मानी जाती हैं, लिहाजा शुरुआत में गेंदबाजों को मदद मिल सकती है। वहीं जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ेगा, बल्लेबाजी के लिए आसान होती जाएगी। बीच के ओवर में स्पिनर्स को भी पिच से मदद मिलने की संभावना है। यहां टीम टॉस जीतकर गेंदबाजी करना पसंद करेगी।

पाकिस्तान में डर का माहौल... स्टेडियम के ऊपर से गुजरे लड़ाकू विमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच खेले जा रहे मुकाबले के साथ चैंपियंस ट्रॉफी का आगाज हो गया है। 29 साल बाद पाकिस्तान में आईसीसी टूर्नामेंट का आयोजन हो रहा है। मार्च 2009 में श्रीलंका टीम पर आतंकवादी हमलों के बाद से लंबे समय तक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट की किसी भी टॉप टीम ने पाकिस्तान का दौरा नहीं किया था। इस दशक की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड जैसी टॉप टीमों ने पाकिस्तान का दौरा करना शुरू किया। बुधवार को कराची में मुकाबला शुरू होने से पहले पाकिस्तान फाइटर प्लेन स्टेडियम के ऊपर से गुजरे जिससे काफी जोरदार शोर हुआ और वहां मौजूद फैंस के साथ-साथ कीवी खिलाड़ी झुकते हुए और सहमे नजर आए। पाकिस्तान ने 2015 में जिम्बाब्वे की मेजबानी की और फाफ डुप्लेसी के नेतृत्व में विश्व एकादश की टीम ने सुरक्षा संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए तीन मैच की टी20 अंतर्राष्ट्रीय सीरीज के लिए देश का दौरा किया।

पाकिस्तान इस दौरान अपने मुकाबले दुबई और अबू धाबी में खेला। चैंपियंस ट्रॉफी के लिए 6 टीमें पाकिस्तान में हैं, हालांकि, टीम इंडिया अपने सभी मुकाबले हाइब्रिड मॉडल पर खेलेगा। भारत के सभी मैच दुबई में खेले जाएंगे। पाकिस्तान ने टूर्नामेंट को सफल बनाने के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच खेले जा रहे मुकाबले के दौरान खिलाड़ियों और लोकल फैंस के बीच थोड़ा डर का माहौल बना हुआ है।

ये बांग्लादेशी खिलाड़ी बन सकते हैं टीम इंडिया के लिए मुसीबत

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारतीय टीम अपना पहला मुकाबला बांग्लादेश टीमें आमने-सामने होंगी। भारतीय समयानुसार मुकाबला दोपहर 2.30 बजे शुरू होगा। दरअसल, बांग्लादेश के खिलाफ भारत का पलड़ा भारी रहा है, लेकिन बांग्लादेशी टीम उलटफेर करने में माहिर है। इसके अलावा पिछले 5 वनडे मैचों में भारत के खिलाफ बांग्लादेश का पलड़ा भारी है। बहरहाल, हम नजर डालेंगे बांग्लादेश के उन 5 खिलाड़ियों पर जो भारतीय टीम के लिए मुसीबत बन सकते हैं।

बांग्लादेश के तेज गेंदबाज मुस्ताफिजुर रहमान भारतीय बल्लेबाजों की मुश्किलें बढ़ा सकते हैं। दरअसल, भारत के खिलाफ मुस्ताफिजुर रहमान का प्रदर्शन शानदार रहा है। मुस्ताफिजुर रहमान नई गेंद से स्विंग और पुरानी गेंद से स्लोअर गेंद डालने में माहिर हैं। लिहाजा, भारतीय

बल्लेबाजों को मुस्ताफिजुर रहमान के खिलाफ सतर्क रहना होगा। भारत के खिलाफ तकरीबन 2 साल पहले मेहदी हसन मिराज ने 8वें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए शतक लगाया था। उस मैच में भारतीय टीम को हार का सामना करना पड़ा था। बांग्लादेश के खिलाफ भारतीय टीम को पिछले 5 मैचों में 3 बार हार का सामना करना पड़ा है। बांग्लादेश की इस जीत में मेहदी हसन मिराज का बड़ा योगदान रहा है। मेहदी हसन मिराज शानदार बल्लेबाजी के अलावा बेहतरीन स्पिन गेंदबाज हैं।

तस्कीन अहमद अपनी स्पीड के अलावा नई गेंद से तेज तर्रार स्विंग गेंदबाजी करते हैं। अब तक वनडे फॉर्मेट में तस्कीन अहमद ने 77 मैचों में 109 विकेट झटके हैं। इसके अलावा भारत के खिलाफ तस्कीन अहमद का रिकॉर्डबेहतरीन रहा है। बहरहाल, भारतीय टॉप ऑर्डर बल्लेबाजों को तस्कीन अहमद से सावधान रहना होगा।

मुश्फिकुर रहीम बांग्लादेश की टीम में सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। मुश्फिकुर रहीम के पास इंटरनेशनल क्रिकेट में 15 सालों से ज्यादा का अनुभव है। भारत के खिलाफ मुश्फिकुर रहीम का प्रदर्शन अच्छा रहा है। खासकर मुश्फिकुर रहीम बड़े मैचों में भारत के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। लिहाजा, भारतीय गेंदबाजों के सामने मुश्फिकुर रहीम को जल्द पवैलियन भेजने की चुनौती होगी। बांग्लादेश के मौजूद कप्तान नजमुल हसन शांतो की गिनती शानदार बल्लेबाजों में होती है। इससमय नजमुल हसन शांतो बेहतरीन फॉर्म से गुजर रहे हैं। दरअसल, नजमुल हसन शांतो अपनी बल्लेबाजी से अकेले दम पर मैच का पासा पलटने की काबिलियत रखते हैं। लिहाजा, भारतीय गेंदाबाजों को नजमुल हसन शांतो से सतर्क रहना होगा।

भारत के खिलाफ मुकाबले से पहले कप्तान नजमुल शांटो का बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। 22 वर्षीय राणा के नाम बांग्लादेशी क्रिकेटर द्वारा फेंकी गई सबसे तेज गेंद (152 किमी प्रति घंटा) का रिकॉर्ड है और वह कई मौकों पर 150 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से गेंद फेंकते हैं। उनके स्पैल में गेंदों की औसत गति 145 किमी प्रति घंटा होती है। राणा और तस्कीन अहमद जैसे अनुभवी तेज गेंदबाज की मौजूदगी के अलावा टीम में कुछ उपयोगी ऑलराउंडर और स्पिनर तथा कुछ अच्छे बल्लेबाज भी हैं। बुधवार को मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में शंटो ने कहा, ''बेशक, ऑलराउंडर हमेशा टीम को संतुलित करते हैं और हमारे पास कुछ अच्छे ऑलराउंडर हैं। मुझे उम्मीद है कि वे कल अच्छा प्रदर्शन करेंगे।'' उन्होंने कहा, ''अगर आप इस प्रारूप को देखें तो हमारी टीम काफी संतुलित है और हमें विश्वास है कि हम इस टूर्नामेंट में किसी भी टीम को हरा सकते हैं। सभी

टीम इस ट्रॉफी को जीतने में सक्षम हैं लेकिन मैं ऐसा व्यक्ति हूं जो विरोधियों के बारे में ज्यादा नहीं सोचता। अगर हम अपनी योजना को सही तरीके से लागू करते हैं तो हम किसी भी दिन किसी भी टीम को हरा सकते हैं।'' शंटो का मानना है कि वर्षों के संघर्ष के बाद बांग्लादेश अब एक अच्छे तेज गेंदबाजी आक्रमण का दावा करने की स्थिति में है। उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि हम हमेशा अपने तेज गेंदबाजी आक्रमण को लेकर जूझते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ वर्षों में हमें कुछ बेहतरीन तेज गेंदबाज मिले हैं। अब हमारे पास नाहिद राणा, तास्किन हैं और वे जिस तरह से गेंदबाजी कर रहे हैं, मुझे लगता है कि इससे काफी मदद मिलती है।'' शंटो ने कहा, ''एक कप्तान के तौर पर हम उन्हें तेज गेंदबाजी करते देखना पसंद करते हैं। इसलिए मैं बेहद खुश हूं कि हमारे पास एक अच्छी तेज गेंदबाजी इकाई है और दूधिया रोशनी में गेंद स्विंग हो सकती है। इसलिएअगर वे अच्छे क्षेत्रों में गेंदबाजी करते हैं तो इससे हमारी टीम को मदद मिलेगी।'' राणा ने अपने शुरुआती करियर में अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने छह टेस्ट मैच में 20 विकेट और तीन वनडे मैच में चार विकेट चटकाए हैं। बांग्लादेश ऐसे ग्रुप में है जिसमें नजरें चिर प्रतिद्वंद्वियों भारत और पाकिस्तान पर है। शंटो से पूछा गया कि क्या किसी बड़े टूर्नामेंट से पहले यह एक अनुकूल स्थिति है। शंटो ने कहा, ''हां, बेशक। मुझे लगता है कि अगर आप सभी आठ टीम को देखें - वे बेहतरीन टीम हैं। भारत, पाकिस्तान, न्यूजींलैंड के खिलाफ हमारी अच्छी यादें हैं।

हमने हाल के दिनों में कुछ मैच जीते हैं।'' उन्होंने कहा, ''पिछले साल जब हमने बांग्लादेश में भारत के साथ खेला था तब से हमारे पास कुछ अच्छी यादें हैं। लेकिन वह अतीत की बात है। मुझे लगता है कि अगर हम कल अच्छा खेलते हैं और अपनी योजना पर अमल करते हैं तो कल हमारे लिए मैच अच्छा होगा।''

रोड कंस्ट्रक्शन कंपनी के अधिकारीयों पर लगाए गंभीर आरोप

ट्रक ड्राईवर की मौत पर हुआ बवाल, परीजनो ने शव रखकर लगाया जाम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के चोराहटा थाना क्षेत्र में एक दर्दनाक हादसा हो गया. हादसे में एक हाइवा ट्रक चालक की दर्दनाक मौत हो गई. हादसे के बाद गुस्साए मृतक के परिजनों ने स्थिति मुकुंदपुर व्हाइट टाइगर सफारी रोड में शव रखकर चक्काजाम कर दिया. घटना की सूचना मिलते ही तत्काल पुलिस की टीम घटना स्थल पहुंच गई जिसके बाद परिजन और पुलिस के बीच तीखी नोक झोंक हो गई. गुस्साए परिजनो का आरोप था की कंस्ट्रक्शन कंपनी के अधिकारीयों अगर समय रहते मदद करते तो शायद मृतक ट्रक ड्राईवर की जान बच जाती. परीजनो का कहना था की रोड कंस्ट्रक्शन कंपनी की ओर से मृतक के परिजनों को 50 लाख रुपय मुआवजे के तौर पर दिए जाएं जिससे की मृतक के परिसर का भरण पोषण किया जाए।

ट्रक ड्राईवर की मौत के बाद हंगामा परीजनो ने लगाया चका जाम : मृतक के परिजनों ने बताया की रीवा के चोराहटा थाना क्षेत्र स्थिति रौसर गांव से होकर गुजरने वाली व्हाइट टाइगर मुकुंदपुर सफारी रोड में सिलपरा रोड पर उदित इंफ्रा नाम की कंपनी संचालित है कंपनी के द्वारा बायपास रोड का निर्माण किया जा रहा है. कंपनी में धोबहट गांव के निवासी रमेश यादव ट्रक ड्राईवर था गुरुवार की दोपहर ट्रक चालक रमेश के मना करने बावजूद कंपनी के अधिकारियो ने उसे इसे रास्ते से भेजा जो की बेहद खराब थी और और उसी रास्ते के बगल से एक नदी थी. बालू से लोड ट्रक जब रमेश यादव लेकर आंगे बढ़ा तो वह अचानक से नदी में की तरफ गिरकर पलट गया जिसके बाद ट्रक में लोड बालू में रमेश दब गया।

मृतक के साथी और कंस्ट्रक्शन कंपनी के डायरेक्टर पर लगाए आरोप: प्रत्यक्षदर्शी मृतक के साथी ड्राईवर ने आरोप लगाती हुए कहा की घटना के बाद वह दौड़कर कम्पनी के डायरेक्टर के पास गया और मदद की गुहार लगाते हुए कहा की रमेश का ट्रक नदी पर पलट गया है पास में ही जेसीबी खड़ी हुइ है अगर तत्काल मदद मिल जाए तो रमेश के जान बच सकती है, लेकिन डायरेक्टर ने उसे दुत्कार कर वहां से भगा दिया और कहा की मरता है तो मरने दो. साथी ट्रक ड्राइवर का कहना था की इसके बाद उसने खुद ट्रक का कांच तोड़कर रमेश को बाहर निकाला लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी.

गुस्साए परीजनो ने कंपनी से 50 लाख मुआवजे की करी मांग : हादसे के बाद गुस्साए ग्रामीणों और परीजनो ने शव को मुख्य मार्ग पर रखकर चक्काजाम कर दिया. वहीं घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस के टीम पहुंची और परीजनो को समझाइस देने का प्रयास किया इसी बीच प्रदर्शनकारियो और पुलिस के बीच नोकझोंक हो गई. मामले पर परिजन और मृतक के साथी ड्राइवर की मांग थी की रमेश के छोटे छोटे बच्चे और पत्नि है उनके भरण पोषण के लिऐ कंपनी की ओर से 50 लाख की मुआवजा राशी दी जाए.

सीएसपी ने बताया हादसे ट्रक ड्राइवर की हुई थीं मौत : मौके पर पुलिस टीम के साथ पहुंची सीएसपी रितु उपाध्याय का कहना है की रावतसर से मुकुंदपुर की ओर जाने वाले रास्ते में एक ट्रक हादसा हुआ है जिसमे हाइवा ट्रक नदी में जा गिरा और जिससे चालक रमेश यादव की मौत हुई है. पटना से गुस्सा है परिजनों ने सड़क पर सब रख कर चक्का जाम किया था. जाम खुलवाकर शव को पीएम के लिऐ अस्पताल भेजा जाएगा.

बैजू धर्मशाला से निकलेगी भगवान भोलेनाथ भव्य बरात 26 फरवरी को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी भगवान भोलेनाथ की भव्य बरात व्यंकट रोड़ रीवा स्थित बैजू धर्मशाला के प्रांगण से 26 फरवरी 2025(गुरूवार) को प्रातःकाल 9.00 बजे निकाली जावेगी। भोलेनाथ की बरात बैजू धर्मशाला से प्रारंभ होकर खन्ना चौराहा, व्यंकट रोड़, स्टेच्यू चौराहा, सांई मंदिर, चक्रधर सिटी,रसिया मोहल्ला, शिल्पी प्लाजा बी-ब्लाक से होते हुए स्वागत भवन, प्रकाश चौराहा, स्टेच्यू चौराहा, सिन्धी चौराहा, फोर्ट रोड़ होते हुए एस0के0स्कूल के पास से मुड़कर श्रमकल्याण केन्द्र के पास स्थित पचमठा आश्रम पहुँचेगी जहां शिव-पार्वती का विवाह विधि विधान के साथ सम्पन्न होगा। इस अवसर पर पचमठा आश्रम में दोपहर 01 बजे से सांयकाल 6.00 तक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ विशाल भण्डारा का आयोजन किया जावेगा। साथ ही

25 फरवरी को पंचमठ आश्रम में प्रातःकाल 9.00 बजे से अखण्ड मानस पाठ का आयोजन किया जावेगा। उक्त कार्यक्रम के भव्यता प्रदान करने के लिए शिवबरात आयोजन एवं जनकल्याण समिति की बैठक दिनांक 19/02/2025 को व्यंकट रोड रीवा स्थित रीवा मार्केट में सांयकाल 7.30 बजे पंचमठ आश्रम के प्रमुख श्री विजयशंकर ब्रह्मचारी के मुख्य आतिथ्य में तथा समिति के अध्यक्ष मनीष गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक का संचालन एड0 सुनील अग्रवाल ने किया। बैठक में समिति के अध्यक्ष मनीष गुप्ता ने बताया कि -भगवान भोलेनाथ की बरात में धर्म ध्वजा, शहनाई,नगड़िया, घोड़ा, बग्घी, झंकार धमाल, भोलेनाथ की पालकी, राधाकृष्ण की रासलीला की झांकी, मॉ काली की झांकी, कृष्ण सुदामा की झांकी, राजस्थानी फोक डांस, गरबा नृत्य, अघोरी नृत्य, के साथ चलित आर्केष्ट्रा मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहेगी। भगवान भोलेनाथ की बरात का 108 स्थानों पर शिव बरात केमार्ग में श्रद्धालुओं द्वारा स्वागत किया जावेगा।

चित्रांगन महोत्सव में साधो बैंड ने जीता दिल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। चित्रांगन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म एवं नाट्य महोत्सव के प्रथम सत्र का शुभारम्भ रीवा के कृष्णा राजकपूर आडिटोरियम में हुआ । 20 फरवरी से 24 फरवरी तक आयोजित चित्रांगन फिल्म एवं नाट्य महोत्सव का यह पांचवां वर्ष है । संस्कृति मंत्रालय, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग, जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, नगर निगम रीवा एवं स्थानीय जन सहयोग से आयोजित यह महोत्सव सभी दर्शकों हेतु पूर्णतः निःशुल्क है। प्रथम दिवस के प्रथम सत्र में फिल्मों का प्रदर्शन हुआ, आज प्रदर्शित फिल्मे क्रमशः वंश, डोंट लीव मी, बहरूपिया, माई फादर इज अफ्रेड ऑफ वाटर प्रमुख रहीं । इन फिल्मों ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, कला एवं कलाकार का सम्मान, पारिवारिक समन्वय के मुद्दों को प्रदर्शित करने वाली थीं ।

पांचवें चित्रांगन फिल्म एवं नाट्य महोत्सव की पहली शाम देश के सुप्रसिद्ध साधो बैंड की प्रस्तुति हुई । इस दौरान अतिथि के रूप में अध्यक्ष नगर निगम रीवा व्यंकटेश पाण्डेय, पुलिस अधीक्षक रीवा विवेक सिंह, आयुक्त नगर निगम सौरभ सोनवाने, सहित गरिमामय नागरिक उपस्थित रहे। साधो बैंड के कलाकारों ने अपने संगीत से सभी को मोहित कर लिया । इस दौरान 1000 से अधिक बैठक संख्या के कृष्णा राज कपूर आडिटोरियम की सभी सीट फुल थी । सभी दर्शक उत्साहित रहे ।

पांचवें चित्रांगन फिल्म एवं नाट्य महोत्सव में फिल्म, संगीत, लोक कला, आर्ट क्रॉफ्ट की प्रदर्शनी परिसर में लगाई गई है । साथ ही साथ देश के प्रसिद्ध राजकमल प्रकाशन,लोक भारती प्रकाशन द्वारा पुस्तकों का मेला लगाया गया है । यहां साहित्य प्रेमियों की भीड़ लगी हुई है । यह महोत्सव में विशेष आकर्षण का केंद्र भी बना हुआ है ।

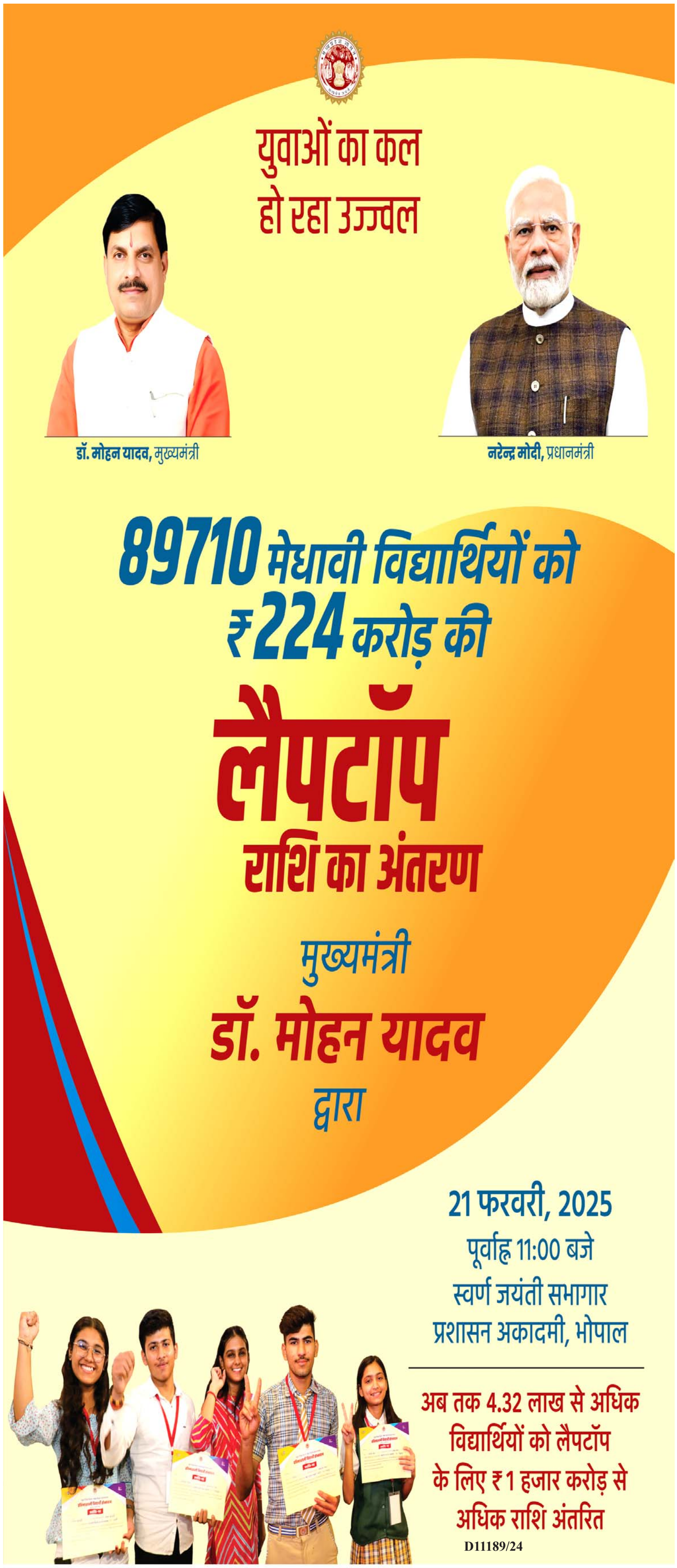

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।